—: प्रथम दिवस :—
भागवत कथा

श्रीमद् का अर्थ:

निगेटिव इमोशन- 6 मे एक मद
① लक्ष्मी से युक्त, राधा से युक्त,
② भक्ति से युक्त
श्री - जिसमे सारे उत्तम तत्व है।
मद - पूर्ण

भागवत का अर्थ:

भ - भक्ति

ग - ज्ञान

व - वैराग्य

त - त्याग

पुराण का अर्थ:

पुरा अपि नवं इति स पुराणम् ॥
पुरा भवं पुराणम् ॥
पुरापि नवं पुराणम् ॥

1) भागवत जी मे द्वादश स्कन्ध
भागवत जी मे 335 अध्याय
भागवत जी मे 18000 श्लोक

2) भागवत जी के द्वादश स्कन्ध कौन है
भागवत जी के द्वादश स्कन्ध श्री नारायण के अंग है।

प्रथम, द्वितीय - श्री नारायण के चरण है

तृतीय, चतुर्थ - जंघा

पंचम, षष्ठ - उदर, वक्षस्थल

सप्तम, अष्टम - भुजाए

नवम, - ग्रीवा

दशम - खिलामुखारबिन्दु

एकादश - ललाट

द्वादश - शीष

प्रथम दिवस मे हम (1) भागवत क्या है?
(2) भागवत क्यो सुनते है?
(3) इससे किन-2 की मुक्ति हुई?
आदि विषय के बारे मे जानते है।

इसलिए प्रथम दिवस की कथा को भागवत महात्म्य की कथा बोलते है।

महात्म्य :- महत्व, गुण क्या है भागवत जी के आदि के विषय मे बोध करते है।

प्रेम जब तक नही होता जब तक प्रेम करने वाले व्यक्ति के गुण, स्वभाव आदि के विषय मे बोध नही हो जाता।

जाने बिनु न होइ परतीती।
बिनु परतीति होइ नहि प्रीती॥

भागवत की कथा तीन जगह हुई॥

सूत - शौनक ऋषियो के मध्य - नैमिष मे

सुकदेव - परीक्षित के मध्य - गंगा तट शुक्र

मैत्रेय मुनि - बिदुर के मध्य - हरिद्वार मे

आइए भागवत जी के प्रथम श्लोक मे प्रवेश करते है। अनुस्टुप छन्द, 4 चरण मे

(1) सच्चिदानन्द रूपाय,
विश्वोत्पत्यादि हेतवे ॥
तापत्रयविनाशाय,
श्रीकृष्णाय वयं नुमः ॥

सच्चिदानंद-सन्धि ⇒ सत + चित + आनन्द

(1) सत – जिसका न आदि है (अनादि)
जिसका कोई अंत नही है (अनत)
जो पूर्व मे था, मध्य मे है, अन्त मे भी रहता है वही परमात्मा सत्य है।

उदाहरण:- एक गृहिणी का स्वर्ण का हार प्राचीन हो गया तो वह स्वर्णकार के पास गई और अपने पुराने हार को गलाकर नवीन हार बनाने के लिए निवेदन किया। स्वर्णकार ने जब हार को गलाया उससे पहले भी हार सोने का, गलने के पश्चात भी सोने का, और जब नवीन हार बनके तैयार हो गया तब भी सोने का ही कहलाए

Note – इसी प्रकार परमात्मा पूर्व, मध्य, अंत मे सदैव रहते है।

(२) चित → प्रकाश, जो परमात्मा सत् है उसका एक स्वरूप चित भी है। और वह चित (प्रकाश) स्वरूप मे हमारे शरीर मे (आत्मा) रूप मे विराजि है। जिस दिन शरीर रूपी पिंजड़े से चित (आत्मा) रूपी तोता निकल जाता है। उस दिन से, उस क्षण से ही उसके अपने प्रिय बन्धु बान्धव भी कहने लगते भईया जल्दी करो दुर्गन्ध आने लगेगी।

उदाहरण → एक दिन एक स्त्री का पति मर गया सभी परिवारीजन विलाप करने लगे। एक महापुरुष ने आकर पूछा अरे भाई क्यो रो रहे हो। मृतक व्यक्ति से जिसका जो सम्बन्ध था, वह नाम लेकर कहने लगे (चला गया) महापुरुष ने कहा कहाँ चला गया यह तो यही पड़ा हुआ है, न तो शरीर की आकृति घटी न ही स्वरूप बिगड़ा तब सब ने उत्तर दिया इसके भीतर जो था वह चला गया भीतर कौन था (आत्मा) स्वरूप मे गोबिंद जी वह इस शरीर से निकल कर चले जाते है तो हमारे प्रियजन भी हमको सपने मे भी देखकर डर जाते है।

पद → सूरदास जी - ① मन पंछी उडि जइहे

जा दिन मन पंछी उड़ि जइहे।
ता दिन तेरे तन तरुवर के,
सबहि पात झरि जइहे ॥

②
घर के कहहि वेगहि काढो,
भूत भये कोऊ खइहे।
जा प्रीतम सो प्रीति घनेरी
सोऊ देखि डरी जइहे॥

Date ____
Page ____

चौ० ईश्वर अंश जीव अविनाशी।
चेतन, अमल, सहज, सुख राशी॥

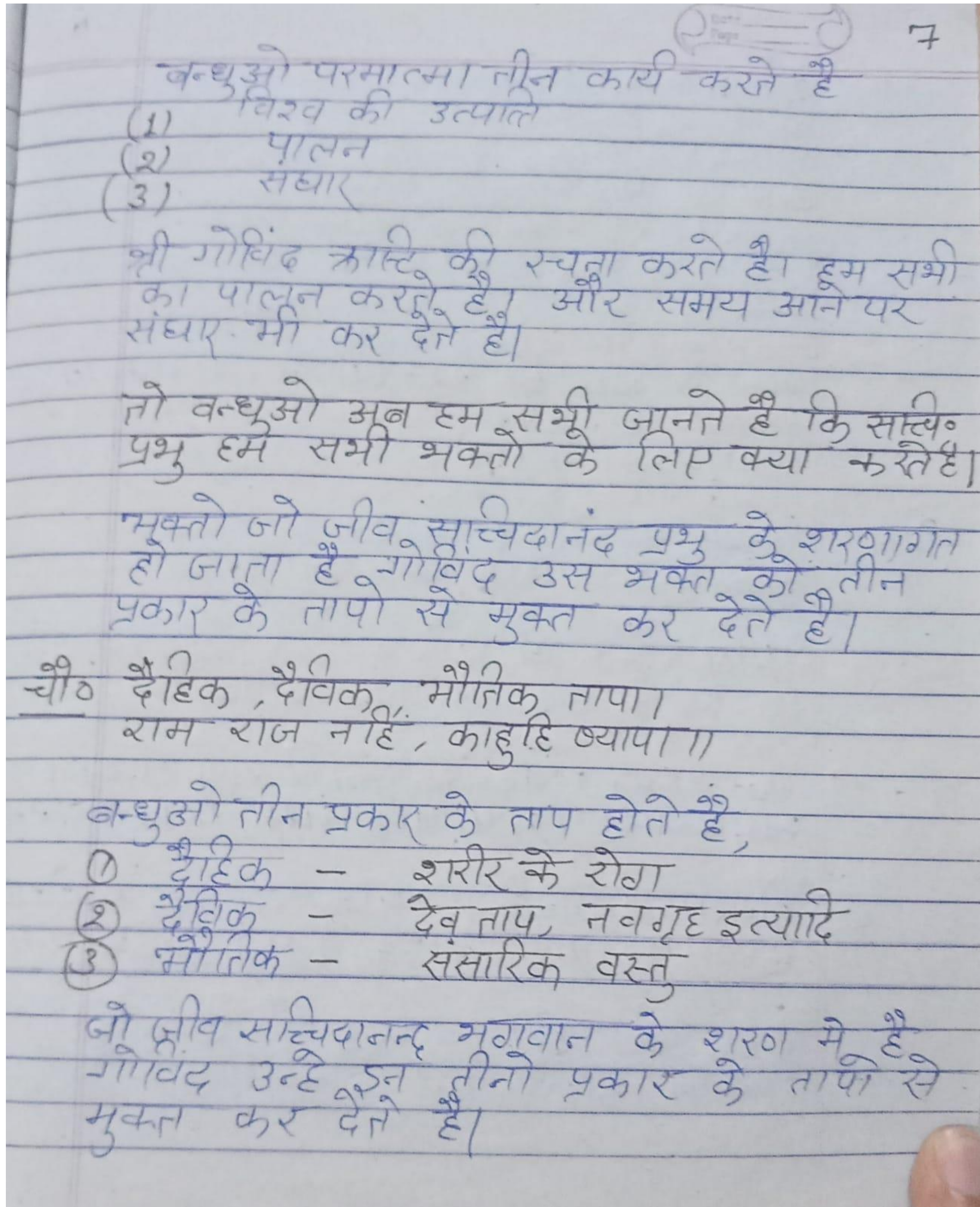
अर्थ - ईश्वर का अंश है जीव। जब शरीर से पित रुपी गोविंद निकल जाता है। तो संसार से हमारी प्रद समाप्त हो जाती है।
बन्धुओ तो इसरा स्वरुप भगवान का चित है।

(3) आनन्द → बन्धुओ सुख, आनन्द दो अलग-2 शब्द है सुख भौतिक है और आनन्द आध्यात्मिक है। संसारिक वस्तुओ से सुख तो मिल सकता है किन्तु आनन्द नही सुख क्षणिक होता है। आनन्द बाहर ढूनने का विषय नही है। आनन्द को अपने भीतर ढूनना होगा। जैसे मीरा, सूरदास, रसखान ने ढूना। असली आनन्द गोविंद के नाम मे ही है। आनन्द का विपरीत कुछ नही होता। आनन्द का तो परमानन्द ही होता है।
तो बन्धुओ परमात्मा का तीसरा स्वरुप क्या है?
आनन्द - गोविंद ही आनन्द स्वरुप है।

Note - तो बन्धुओ हमने यह जाना कि परमात्मा का स्वरुप कैसा है।

अब जानते है परमात्मा कार्य क्या करते है?

श्लोक - विश्वोत्पत्यादि हेतवे -


7
बन्धुओ परमात्मा तीन कार्य करते है
(1) विश्व की उत्पत्ति
(2) पालन
(3) संघार
श्री गोविंद श्रष्टि की रचना करते है। हम सभी का पालन करते है, और समय आने पर संघार भी कर देते है।
तो बन्धुओ अब हम सभी जानते है कि सच्चिदानंद प्रभु हम सभी भक्तो के लिए क्या करते है।
भक्तो जो जीव सच्चिदानंद प्रभु के शरणागत हो जाता है गोविंद उस भक्त को तीन प्रकार के तापो से मुक्त कर देते है।
चौ० दैहिक, दैविक, भौतिक तापा।
राम राज नहिं, काहुहि ब्यापा॥
बन्धुओ तीन प्रकार के ताप होते हैं,
1 दैहिक - शरीर के रोग
2 दैविक - देव ताप, नवग्रह इत्यादि
3 भौतिक - संसारिक वस्तु
जो जीव सच्चिदानन्द भगवान के शरण मे है गोविंद उन्हे इन तीनो प्रकार के तापो से मुक्त कर देते है।

8

श्री कृष्णाय वयं नमः→

जो गोविंद प्रभु सच्चिदानन्द स्वरूप, विश्व की उत्पत्ति, पालन, लय करने वाले, तीनो प्रकार के तापो से भक्तो को मुक्त करने वाले ऐसे श्री पुरुषोत्तम कृष्ण को हम सभी नमन करते है।

आइए बन्धुओ अब हम सभी नैमिष क्षेत्र मे चलते है जहा श्री सूत जी ने शौनकादि ऋषियो को श्रीमद् भागवत महापुराण की कथा श्रवण करायी।

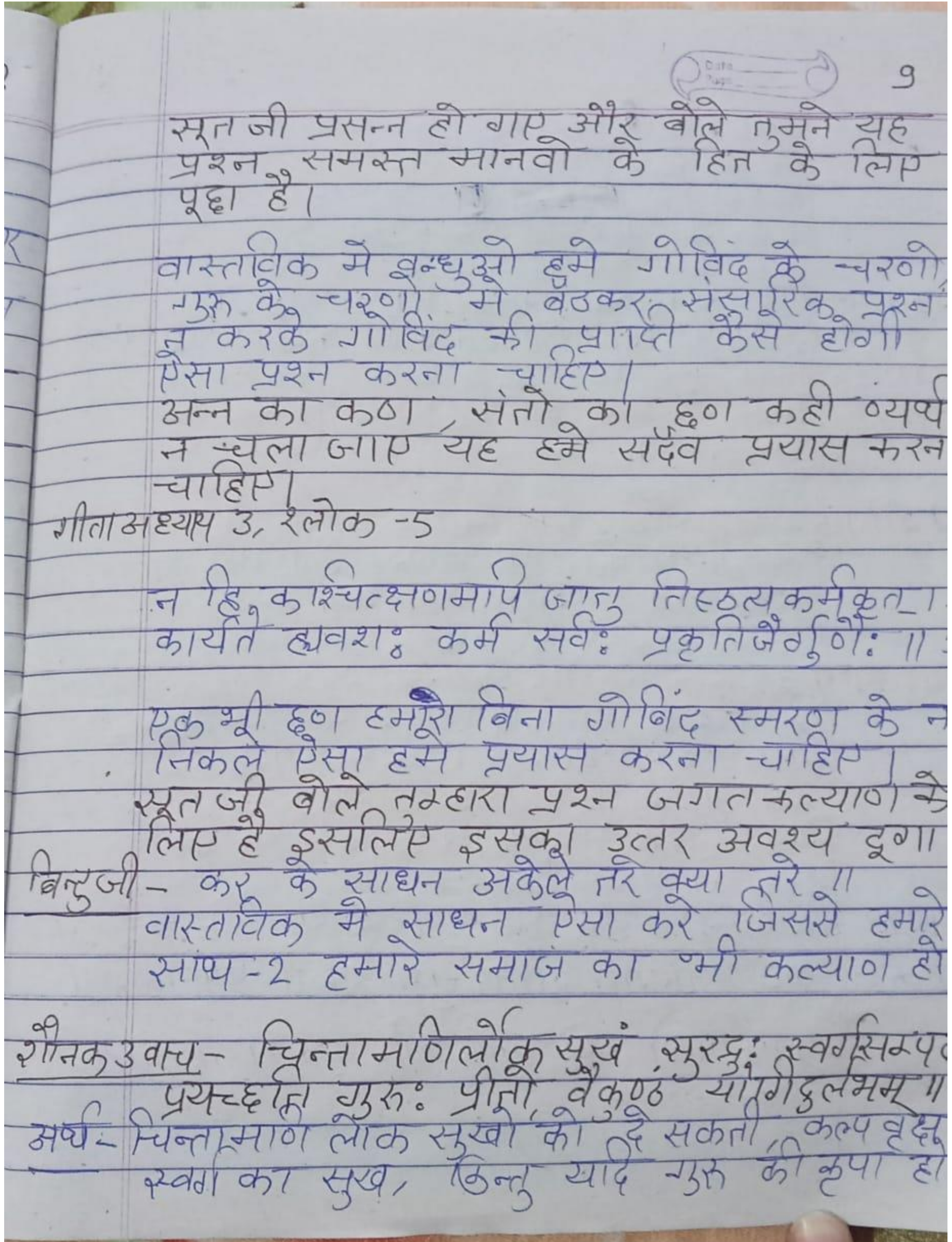
तीरथ वर नैमिष विख्याता।
अति पुनीत साधक सिधि दाता॥

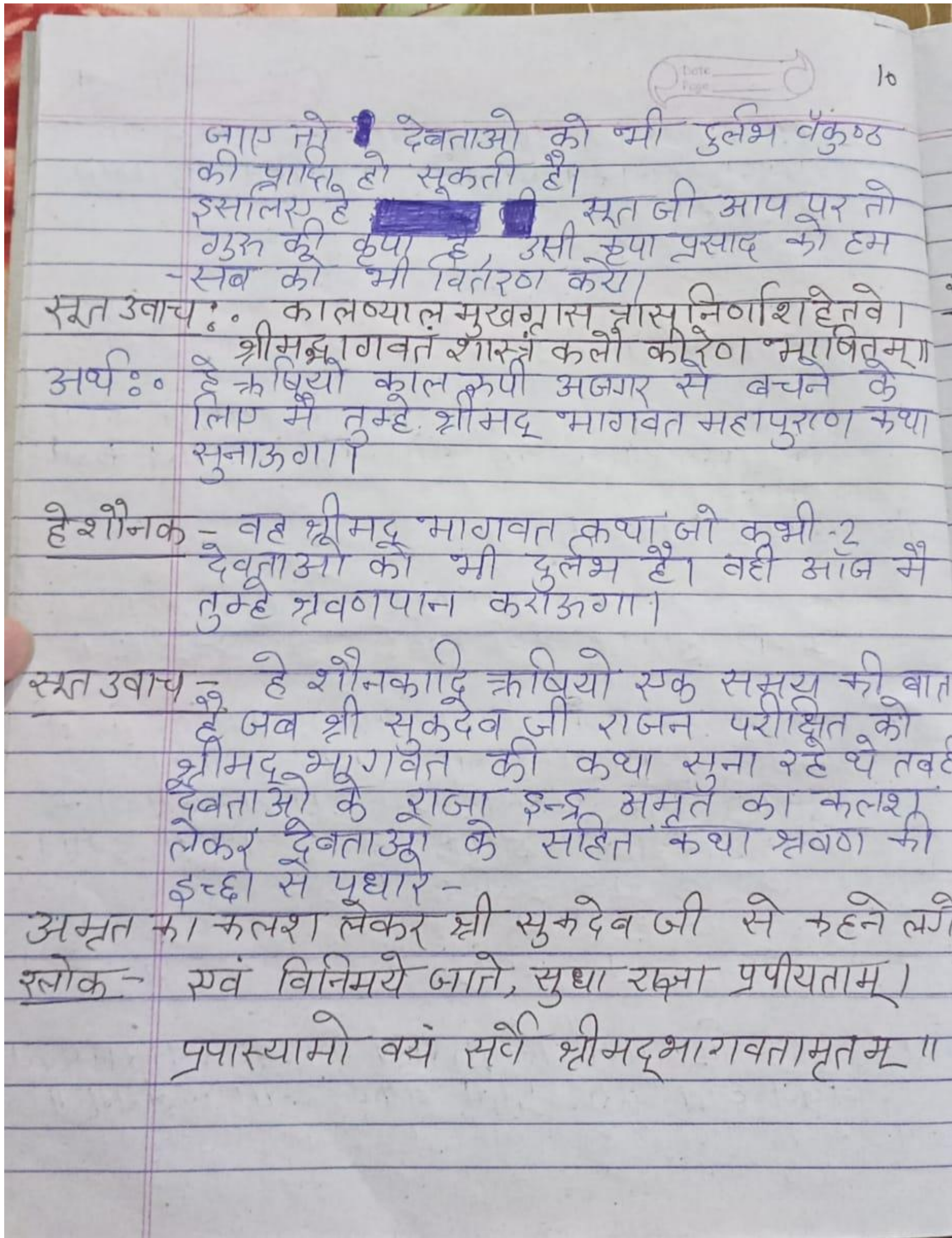
नैमिष - क्षेत्र मे शौनकादि ऋषियो ने श्री सूत जी से पूछा हे सूत जी -

① अज्ञानध्वान्त विध्वंस कोटि सूर्य समप्रभ।
सूताख्याहि कथासारं मम कर्णरसायनम्॥

② श्रेयसां यद्भवेच्छ्रेयः पावनानां च पावनम्।
कृष्णप्राप्तिकरं शश्वत्साधनं तद्वदाधुना॥

हे सूत जी - हमे बताइए गोविन्द की शाश्वत प्राप्ति कैसे होगी।


9
सूत जी प्रसन्न हो गए और बोले तुमने यह प्रश्न समस्त मानवो के हित के लिए पूछा है।
वास्तविक मे बन्धुओ हमे गोविंद के चरणो, गुरु के चरणो मे बैठकर संसारिक प्रश्न न करके गोविंद की प्राप्ती कैसे होगी ऐसा प्रश्न करना चाहिए।
अन्न का कण, संतो का क्षण कही व्यर्थ न चला जाए यह हमे सदैव प्रयास करना चाहिए।
गीता अध्याय 3, श्लोक -5
न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥
एक भी क्षण हमारे बिना गोविंद स्मरण के न निकले ऐसा हमे प्रयास करना चाहिए।
सूत जी बोले तुम्हारा प्रश्न जगत कल्याण के लिए है इसलिए इसका उत्तर अवश्य दूंगा
बिन्दुजी - कर के साधन अकेले तरे क्या तरे ॥
वास्तविक मे साधन ऐसा करे जिससे हमारे साथ-2 हमारे समाज का भी कल्याण हो
शौनक उवाच - चिन्तामणिर्लोकसुखं सुरद्रुः स्वर्गसम्पदं
प्रयच्छति गुरुः प्रीतो वैकुण्ठं योगिदुर्लभम् ॥
अर्थ - चिन्तामणि लोक सुखो को दे सकती, कल्प वृक्ष स्वर्ग का सुख, किन्तु यदि गुरु की कृपा हो



10

जाए तो देवताओ को भी दुर्लभ वैकुण्ठ की प्राप्ति हो सकती है।
इसलिए हे [redacted] सूत जी आप पर तो गुरु की कृपा है, उसी कृपा प्रसाद को हम सब को भी वितरण करें।

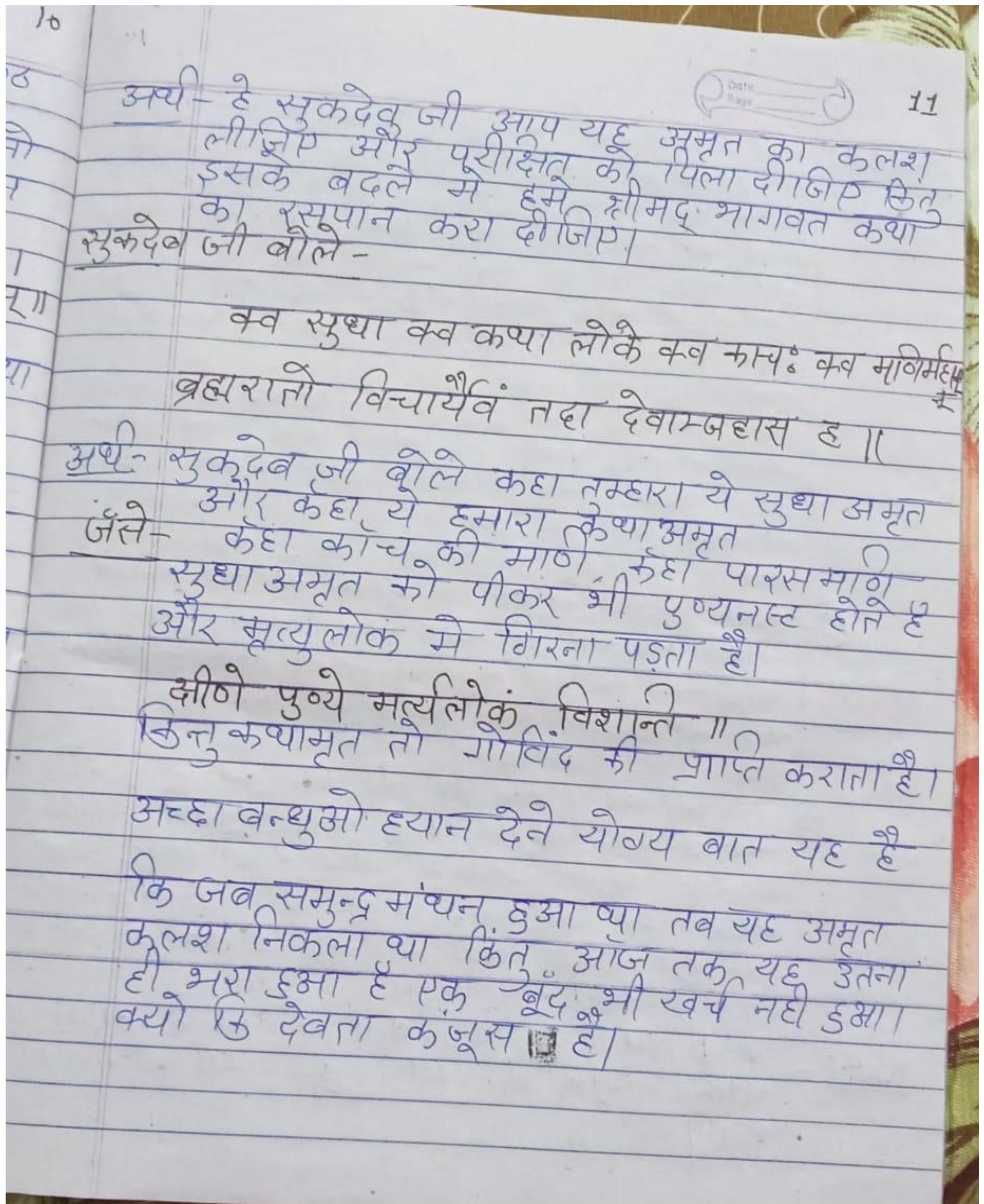
सूत उवाच:- कालव्याल मुखग्रास त्रास निर्णाशहेतवे।
श्रीमद्भागवतं शास्त्रं कलौ कीरेण भाषितम्॥

अर्थः- हे ऋषियो काल रूपी अजगर से बचने के लिए मैं तुम्हे श्रीमद् भागवत महापुराण कथा सुनाऊंगा।

हे शौनक - वह श्रीमद् भागवत कथा जो कभी-2 देवताओ को भी दुर्लभ है। वही आज मैं तुम्हे श्रवणपान कराऊंगा।

सूत उवाच - हे शौनकादि ऋषियो एक समय की बात है जब श्री सुकदेव जी राजन परीक्षित को श्रीमद् भागवत की कथा सुना रहे थे तबहि देवताओ के राजा इन्द्र अमृत का कलश लेकर देवताओ के सहित कथा श्रवण की इच्छा से पधारे -
अमृत का कलश लेकर श्री सुकदेव जी से कहने लगे।

श्लोक - एवं विनिमये जाते, सुधा रक्षा प्रपीयताम्।
प्रपास्यामो वयं सर्वे श्रीमद्भागवतामृतम्॥



11

अर्थ- हे सुकदेव जी आप यह अमृत का कलश लीजिए और परीक्षित को पिला दीजिए किंतु इसके बदले मे हमे श्रीमद् भागवत कथा का रसपान करा दीजिए।

सुकदेव जी बोले-

क्व सुधा क्व कथा लोके क्व काचः क्व मणिर्महान्
ब्रह्मरातो विचार्यैवं तदा देवाम्जहास ह ॥

अर्थ- सुकदेव जी बोले कहा तुम्हारा ये सुधा अमृत और कहा ये हमारा कथा अमृत

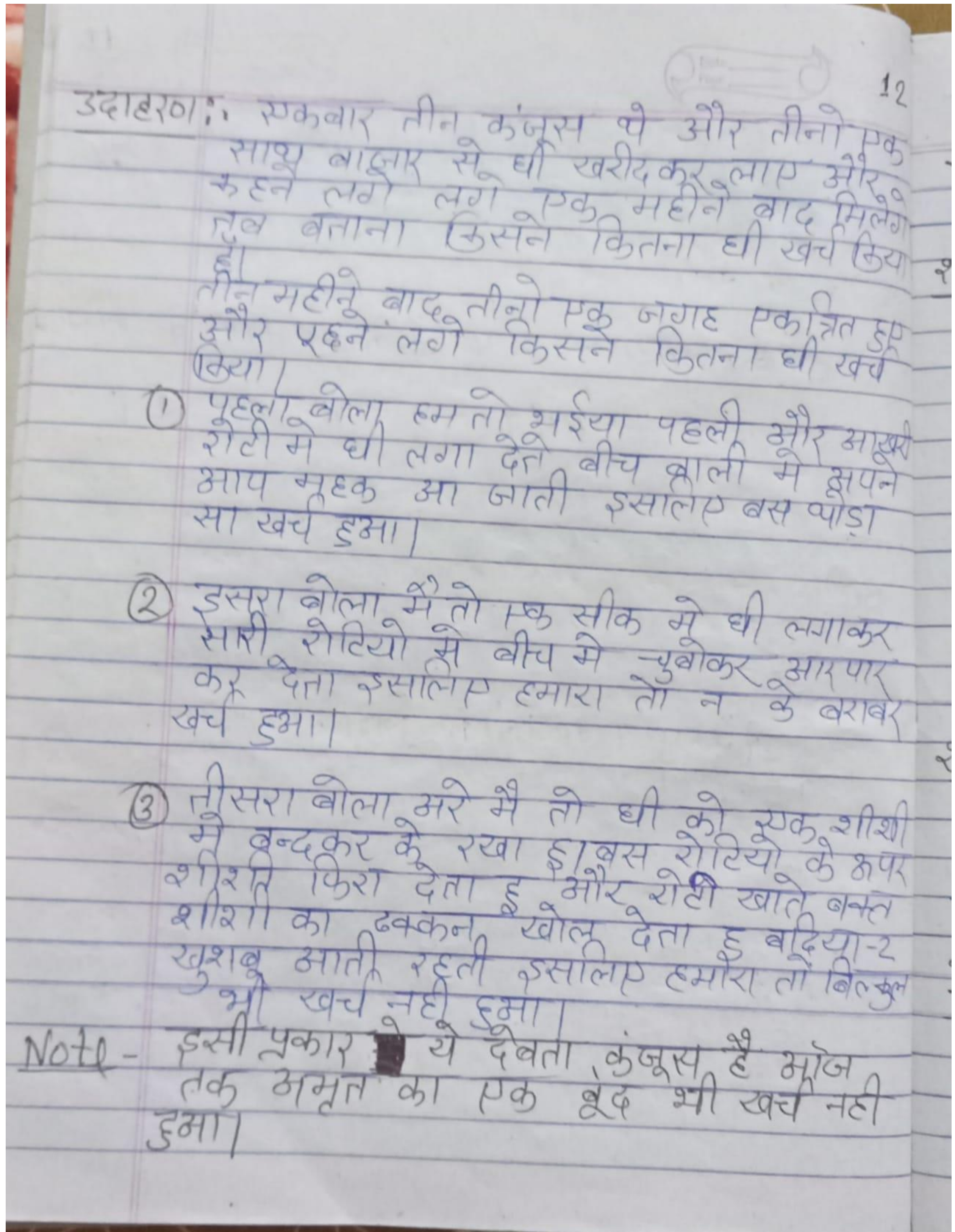
जैसे- कहा कांच की मणि कहा पारस मणि

सुधा अमृत को पीकर भी पुण्यनस्ट होते है और मृत्युलोक मे गिरना पड़ता है।

क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ॥

किन्तु कथामृत तो गोविंद की प्राप्ति कराता है।

अच्छा बन्धुओ ध्यान देने योग्य बात यह है कि जब समुन्द्र मंथन हुआ था तब यह अमृत कलश निकला था किंतु आज तक यह उतना ही भरा हुआ है एक बूंद भी खर्च नही हुआ। क्यो कि देवता कंजूस है।



12

उदाहरण:- एकबार तीन कंजूस थे और तीनो एक साथ बाजार से घी खरीदकर लाए और कहने लगे लगे एक महीने बाद मिलेंगे तब बताना किसने कितना घी खर्च किया है।

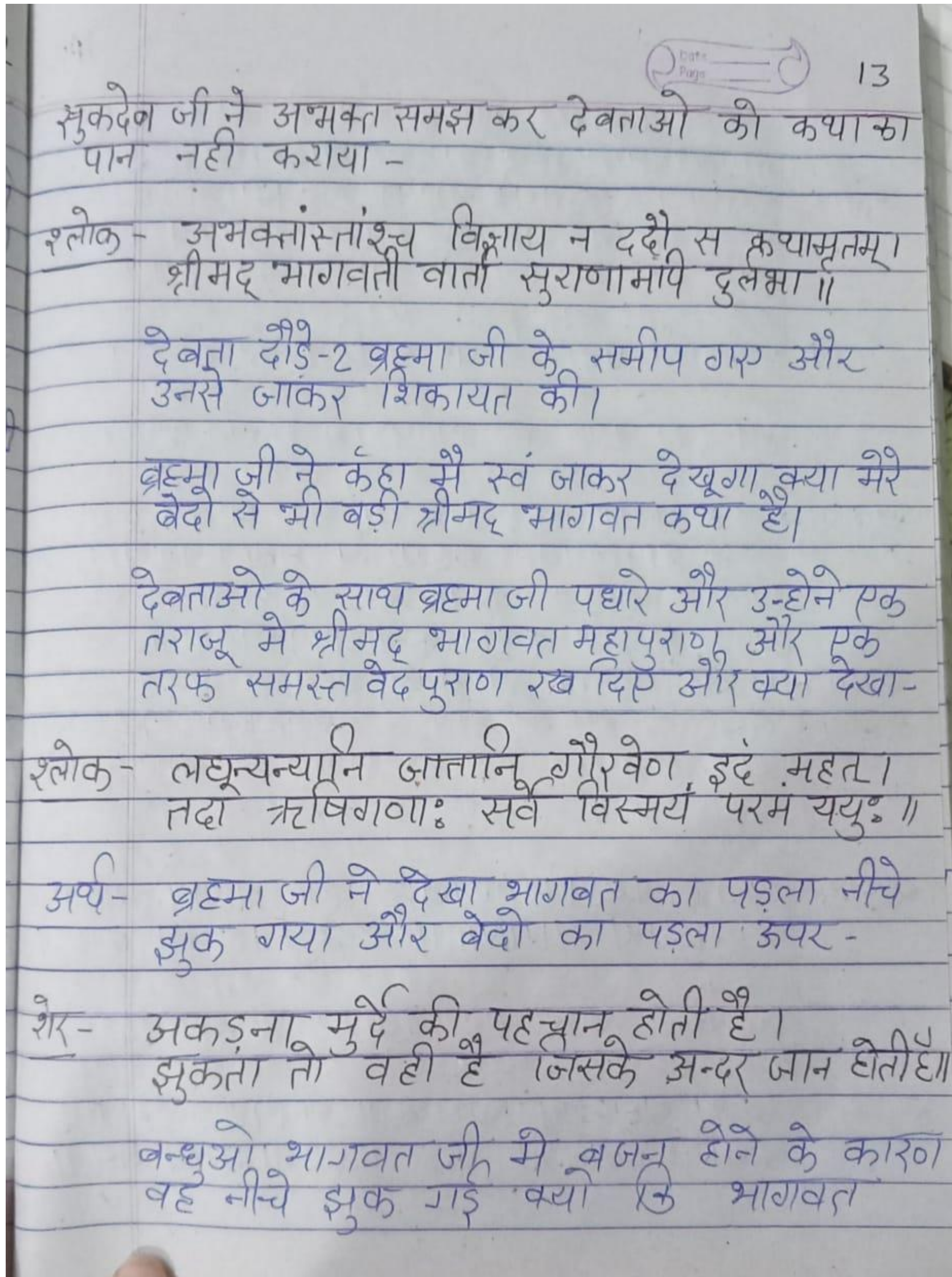
तीन महीने बाद तीनो एक जगह एकत्रित हुए और पूछने लगे किसने कितना घी खर्च किया।

(1) पहला बोला हम तो भईया पहली और आखरी रोटी मे घी लगा देते बीच वाली मे अपने आप महक आ जाती इसलिए बस थोड़ा सा खर्च हुआ।

(2) दूसरा बोला मैं तो एक सीक मे घी लगाकर सारी रोटियो मे बीच मे चुबोकर आरपार कर देता इसलिए हमारा तो न के बराबर खर्च हुआ।

(3) तीसरा बोला अरे मै तो घी को एक शीशी मे बन्दकर के रखा हू बस रोटियो के ऊपर शीशी फिरा देता हू और रोटी खाते वक्त शीशी का ढक्कन खोल देता हू बढ़िया-2 खुशबू आती रहती इसलिए हमारा तो बिल्कुल भी खर्च नही हुआ।

Note- इसी प्रकार [redacted] ये देवता कंजूस है आज तक अमृत का एक बूंद भी खर्च नही हुआ।



13

शुकदेव जी ने अभक्त समझ कर देवताओ को कथा का पान नही कराया -

श्लोक - अभक्तांस्तांश्च विज्ञाय न ददौ स कृपामृतम्।
श्रीमद् भागवती वार्ता सुराणामपि दुर्लभा॥

देवता दौड़े-२ ब्रह्मा जी के समीप गए और उनसे जाकर शिकायत की।

ब्रह्मा जी ने कहा मै स्वं जाकर देखूगा क्या मेरे वेदो से भी बड़ी श्रीमद् भागवत कथा है।

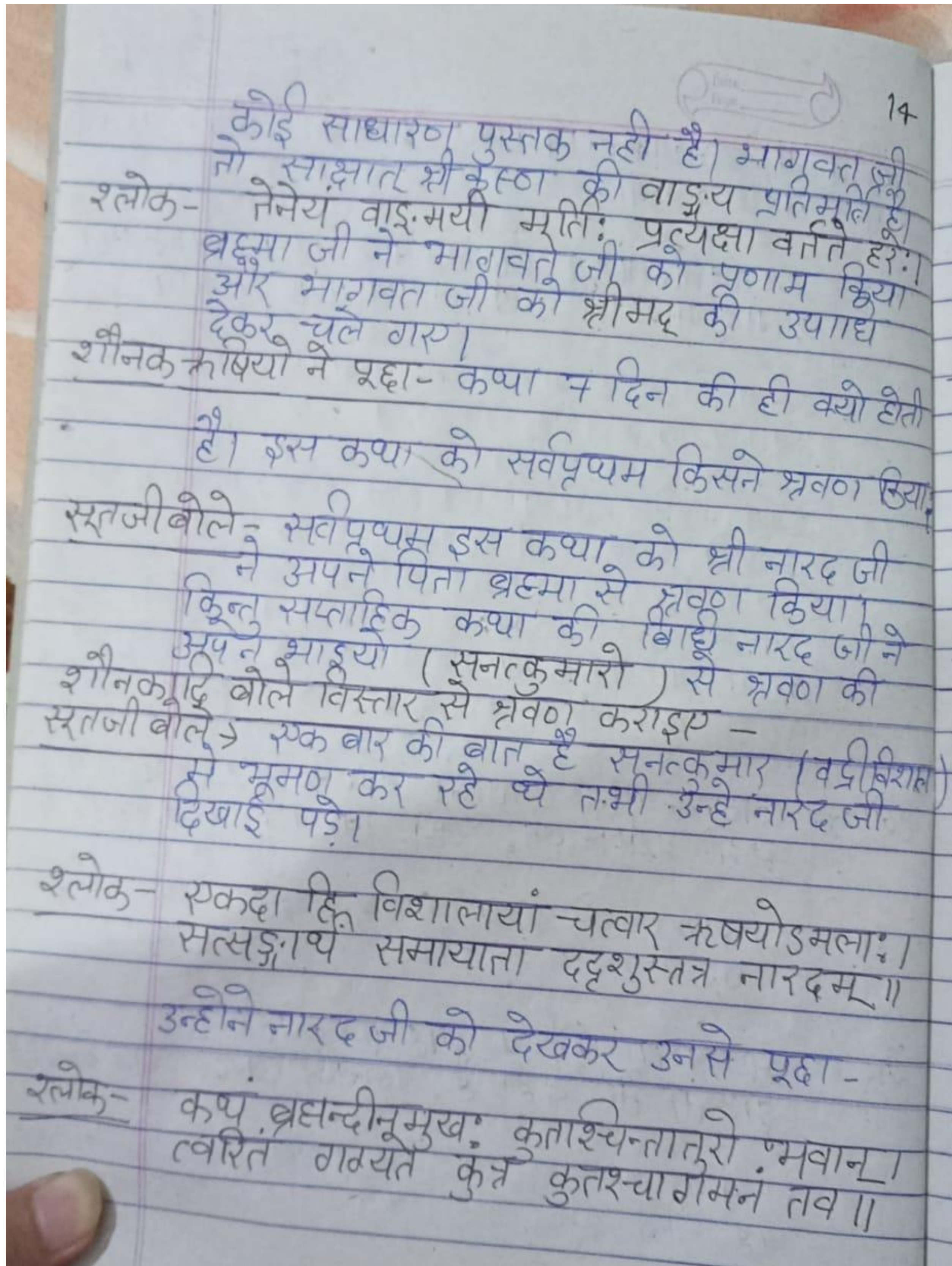
देवताओ के साथ ब्रह्मा जी पधारे और उन्होने एक तराजू मे श्रीमद् भागवत महापुराण और एक तरफ समस्त वेद पुराण रख दिए और क्या देखा -

श्लोक - लघून्यन्यानि जातानि गौरवेण इदं महत्।
तदा ऋषिगणाः सर्वे विस्मयं परमं ययुः॥

अर्थ - ब्रह्मा जी ने देखा भागवत का पड़ला नीचे झुक गया और वेदो का पड़ला ऊपर -

शेर - अकड़ना मुर्दे की पहचान होती है।
झुकता तो वही है जिसके अन्दर जान होती है।

बन्धुओ भागवत जी मे वजन होने के कारण वह नीचे झुक गई क्यो कि भागवत



14

कोई साधारण पुस्तक नही है। भागवत जी
तो साक्षात् श्री कृष्ण की वाङ्मय प्रतिमूर्ति है।

श्लोक- तेनेयं वाङ्मयी मूर्तिः प्रत्यक्षा वर्तते हरेः।

ब्रह्मा जी ने भागवत जी को प्रणाम किया
और भागवत जी को श्रीमद् की उपाधि
देकर चले गए।

शौनक ऋषियो ने पूछा- कथा 7 दिन की ही क्यो होती
है। इस कथा को सर्वप्रथम किसने श्रवण किया।

सूतजी बोले- सर्वप्रथम इस कथा को श्री नारद जी
ने अपने पिता ब्रह्मा से श्रवण किया।
किन्तु साप्ताहिक कथा की विधि नारद जी ने
अपने भाइयो (सनत्कुमारो) से श्रवण की

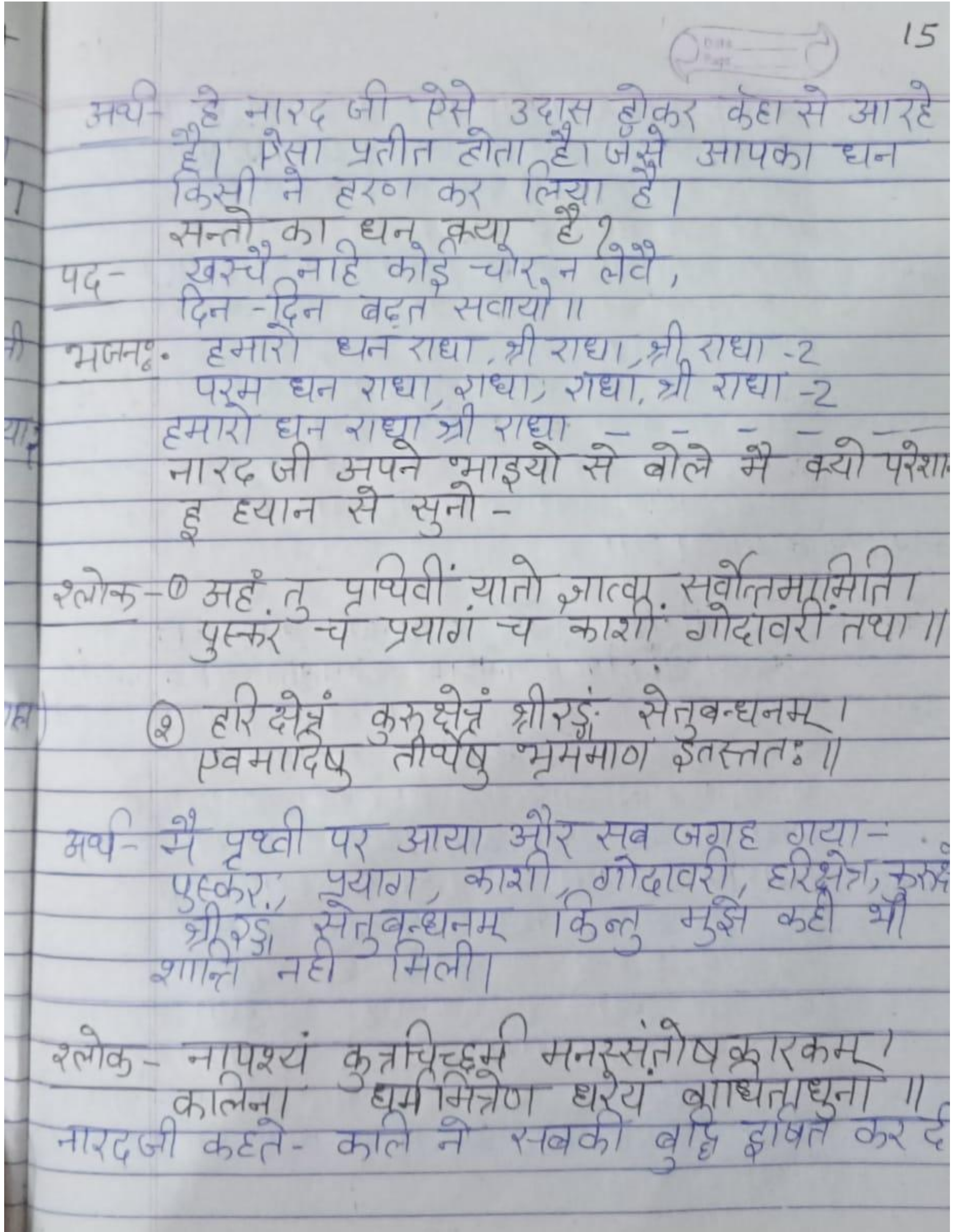
शौनकादि बोले विस्तार से श्रवण कराइए -

सूतजी बोले -> एक बार की बात है सनत्कुमार (बद्रीविशाल)
मे भ्रमण कर रहे थे तभी उन्हे नारद जी
दिखाई पड़े।

श्लोक- एकदा हि विशालायां चत्वार ऋषयोऽमलाः।
सत्सङ्गार्थं समायाता ददृशुस्तत्र नारदम्॥

उन्होने नारद जी को देखकर उनसे पूछा-

श्लोक- कथं ब्रह्मन्दीनमुखः कुतश्चिन्तातुरो भवान्।
त्वरितं गम्यते कुत्र कुतश्चागमनं तव॥



15

अर्थ- हे नारद जी ऐसे उदास होकर कहा से आरहे हो। ऐसा प्रतीत होता है। जैसे आपका धन किसी ने हरण कर लिया है।
सन्तो का धन क्या है?

पद- खरचै नाहि कोई चोर न लेवै,
दिन-दिन बढ़त सवायो॥

भजन:- हमारो धन राधा, श्री राधा, श्री राधा -2
परम धन राधा, राधा, राधा, श्री राधा -2
हमारो धन राधा श्री राधा - - - -

नारद जी अपने भाइयो से बोले मै क्यो परेशा हू ध्यान से सुनो -

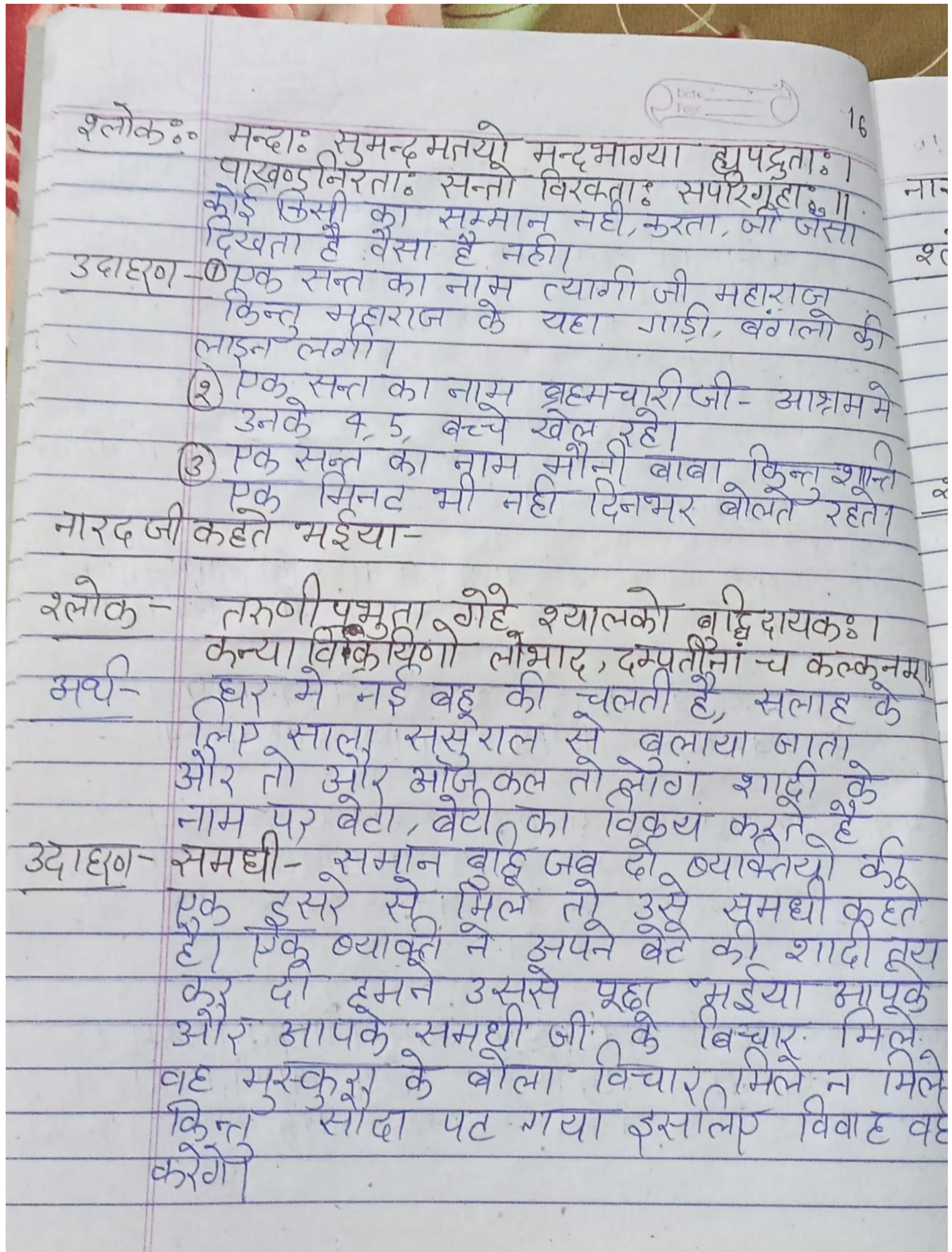
श्लोक- ① अहं तु पृथ्वीं यातो ज्ञात्वा सर्वोत्तमामिति।
पुष्करं च प्रयागं च काशीं गोदावरीं तथा॥

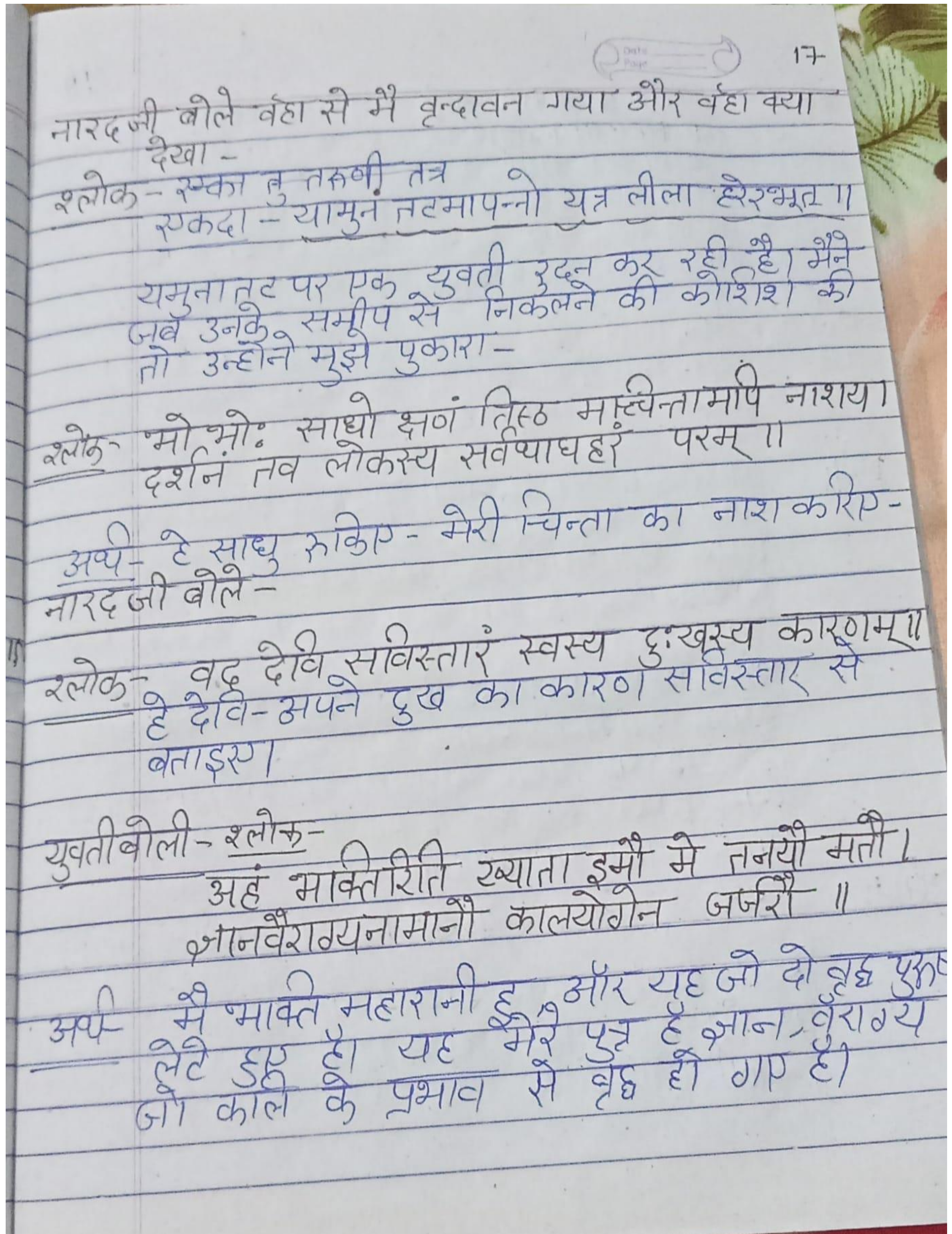
② हरिक्षेत्रं कुरुक्षेत्रं श्रीरङ्गं सेतुबन्धनम्।
एवमादिषु तीर्थेषु भ्रममाण इतस्ततः॥

अर्थ- मै पृथ्वी पर आया और सब जगह गया- पुष्कर, प्रयाग, काशी, गोदावरी, हरिक्षेत्र, कुरुक्षेत्र, श्रीरङ्ग, सेतुबन्धनम किन्तु मुझे कही भी शान्ति नही मिली।

श्लोक- नापश्यं कुत्रचिच्छर्म मनस्संतोषकारकम्।
कलिना धर्ममित्रेण धरेयं बाधिताधुना॥

नारदजी कहते- कलि ने सबकी बुद्धि दूषित कर दी


16
श्लोकः मन्दाः सुमन्दमतयो मन्दभाग्या ह्युपद्रुताः।
पाखण्डनिरताः सन्तो विरक्ताः सपरिग्रहाः॥
कोई किसी का सम्मान नही करता, जो जैसा दिखता है वैसा है नही।
उदाहरण- ① एक सन्त का नाम त्यागी जी महाराज किन्तु महाराज के यहा गाड़ी, बंगलो की लाइन लगी।
② एक सन्त का नाम ब्रह्मचारी जी- आश्रम मे उनके 4, 5, बच्चे खेल रहे।
③ एक सन्त का नाम मौनी बाबा किन्तु शान्ती एक मिनट भी नही दिनभर बोलते रहते।
नारद जी कहते भईया-
श्लोक- तरुणी प्रभुता गेहे श्यालको बुद्धिदायकः।
कन्या विक्रयिणो लोभाद, दम्पतीनां च कल्कनम्॥
अर्थ- घर मे नई बहू की चलती है, सलाह के लिए साला ससुराल से बुलाया जाता और तो और आज कल तो लोग शादी के नाम पर बेटा, बेटी का विक्रय करते है
उदाहरण- समधी- समान बुद्धि जब दो व्यक्तियो की एक दूसरे से मिले तो उसे समधी कहते है। एक व्यक्ति ने अपने बेटे की शादी तय कर दी हमने उससे पूछा "भईया आपके और आपके समधी जी के बिचार मिले वह मुस्कुरा के बोला विचार मिले न मिले किन्तु सौदा पट गया इसलिए विवाह वह करेगे।



17

नारदजी बोले वहा से मै वृन्दावन गया और वहा क्या देखा -

श्लोक - एकदा तु तरुणी तत्र
एकदा - यामुन तटमापन्नो यत्र लीला हरेश्भूत ॥

यमुना तट पर एक युवती रुदन कर रही है मैने जब उनके समीप से निकलने की कोशिश की तो उन्होने मुझे पुकारा -

श्लोक - भो भोः साधो क्षणं तिष्ठ मच्चिन्तामपि नाशय।
दर्शनं तव लोकस्य सर्वथाघहरं परम् ॥

अर्थ - हे साधु रुकिए - मेरी चिन्ता का नाश करिए -

नारदजी बोले -

श्लोक - वद देवि सविस्तारं स्वस्य दुःखस्य कारणम् ॥
हे देवि - अपने दुख का कारण सविस्तार से बताइए।

युवती बोली - श्लोक -
अहं भक्तिरिति ख्याता इमौ मे तनयौ मतौ।
ज्ञानवैराग्यनामानौ कालयोगेन जर्जरौ ॥

अर्थ - मै भक्ति महारानी हू और यह जो दो वृद्ध पुरुष लेटे हुए है यह मेरे पुत्र है ज्ञान, वैराग्य जो काल के प्रभाव से वृद्ध हो गए है।

18

श्लोक- उत्पन्ना द्रविडे साहं, वृद्धिं कर्णाटके गता।
क्वचित्क्वचिन्महाराष्ट्रे, गुर्जरे जीर्णतां गता॥

अर्थ- भक्ति महारानी कहती नारद जी से मैं दक्षिण मे उत्पन्न हुई, कर्णाटक मे पली, बढ़ी, धीरे-२ महाराष्ट्र आई किन्तु गुजरात मे आकर जीर्ण, जीर्ण हो गई।

श्लोक- वृन्दावनं पुनः प्राप्य नवीनेव सुरूपिणी।

अर्थ- वृन्दावन मे आकर मैं पुनः नवीन हो गई किन्तु हमारे यह दो पुत्र वृद्ध हो गए।

Note- वास्तविक मे बन्धुओ वृंदावन भक्ति महारानी का ही घर है।

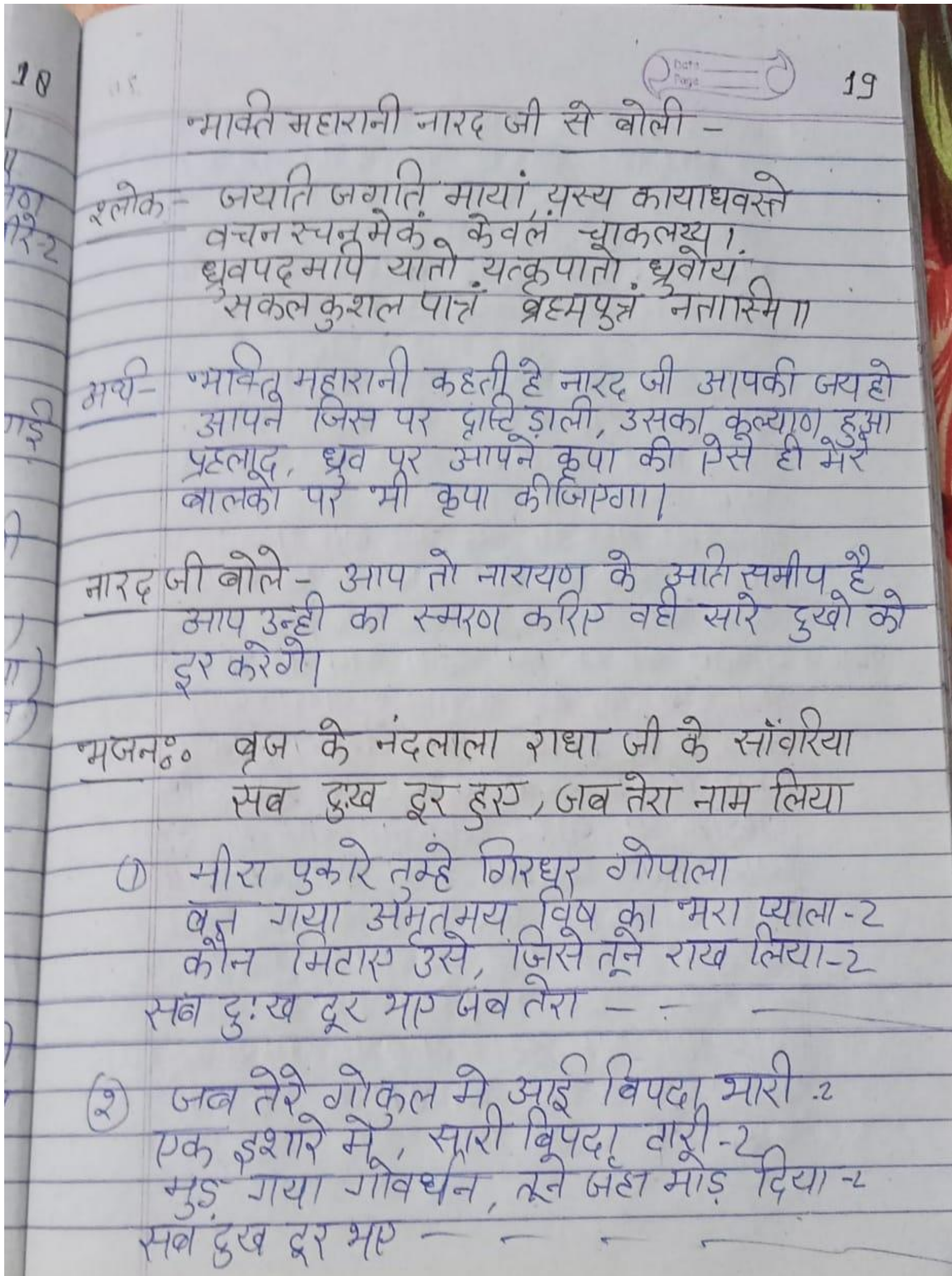
ज्ञान की प्राप्ति के लिए - गंगातट-(बनारस)
वैराग्य की प्राप्ति के लिए- सरयूतट-(अयोध्या)
भक्ति की प्राप्ति के लिए - यमुना तट-(वृंदावन)

भक्ति महारानी कहती है, हे नारद जी एक माँ के सामने उसके दो बेटे वृद्ध हो गए हो उस पर क्या बीतेगी ये आपसे अच्छा कौन जान सकता है।

भक्ति महारानी कहती-

श्लोक- इदं स्थानं परित्यज्य, विदेशं गम्यते मया।

हे नारदजी- अगर मेरे दुखो की निवृत्ति नही हुई तो मैं यह स्थान भी त्यागकर विदेश चली जाऊगी।



19

भक्ति महारानी नारद जी से बोली -

श्लोक- जयति जगति मायां यस्य कायाधवस्ते
वचनरचनमेकं केवलं चाकलय्य।
ध्रुवपदमपि यातो यत्कृपातो ध्रुवोयं
सकलकुशलपात्रं ब्रह्मपुत्रं नतास्मि॥

अर्थ- भक्ति महारानी कहती है नारद जी आपकी जय हो आपने जिस पर दृष्टि डाली, उसका कल्याण हुआ प्रह्लाद, ध्रुव पर आपने कृपा की ऐसे ही मेरे बालको पर भी कृपा कीजिएगा।

नारद जी बोले- आप तो नारायण के अति समीप है आप उन्ही का स्मरण करिए वही सारे दुखो को दूर करेंगे।

भजनः- बृज के नंदलाला राधा जी के साँवरिया
सब दुःख दूर हुए, जब तेरा नाम लिया

(1) मीरा पुकारे तुम्हे गिरधर गोपाला
बन गया अमृतमय विष का भरा प्याला-2
कौन मिटाए उसे, जिसे तूने राख लिया-2
सब दुःख दूर भए जब तेरा — — —

(2) जब तेरे गोकुल मे आई बिपदा भारी-2
एक इशारे मे, सारी बिपदा टारी-2
मुड़ गया गोवर्धन, तूने जहा मोड़ दिया-2
सब दुख दूर भए — — —

20

③ नैनो मे श्याम बसे, मन मे गिरधारी -2
सुध बिसराए गई, मुरली की धुन प्यारी-2
मन के मधुबन मे, रास रचाए रसिया
सब दुःख दूर हुए - - -

श्री नारद जी ने ज्ञान वैराग्य के बुढ़ापे को दूर करने के अनेको प्रयत्न किए -

श्लोक- वेदवेदान्त घोषैश्च, गीतापाठैर्मुहुर्मुहुः ।
नारद जी सनत्कुमारो से कहते भईया मैने वेद, वेदान्त, गीता जी सभी का पाठ किया किन्तु जब तक हम उनको पाठ सुनाते तब तक तो वह उठ कर बैठ जाते किन्तु जैसे ही पाठ बन्द होता वह दोनो ज्ञान, वैराग्य फिर से पृथ्वी पर मूर्छित हो जाते।

उदा०- वास्तव मे बन्धुओ हम सब की भी यही स्थिति है। जब तक हम कथा, सत्संग श्रवण करते तब तक तो हमारे ज्ञान वैराग्य खूब जागृत अवस्था मे रहते किन्तु जैसे ही हम कथा पाण्डाल से बाहर निकलते वैसे ही हमारे ज्ञान और वैराग्य दोनो ही सो जाते - नारद जी कहते भईया तभी देववाणी हुई कि ज्ञान वैराग्य के बुढ़ापे को दूर करने के लिए सत्कर्म करो। तब से सभी से मै यही पूछ रहा सत्कर्म किसे कहते है, भईया आप ही बताओ ना सत्कर्म किसे कहते है।

कुमाराऊचु:- सनत्कुमार बोले नारद-

श्लोक- द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा, योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्याय ज्ञानयज्ञाश्च ते तु कर्मविसूचकाः॥

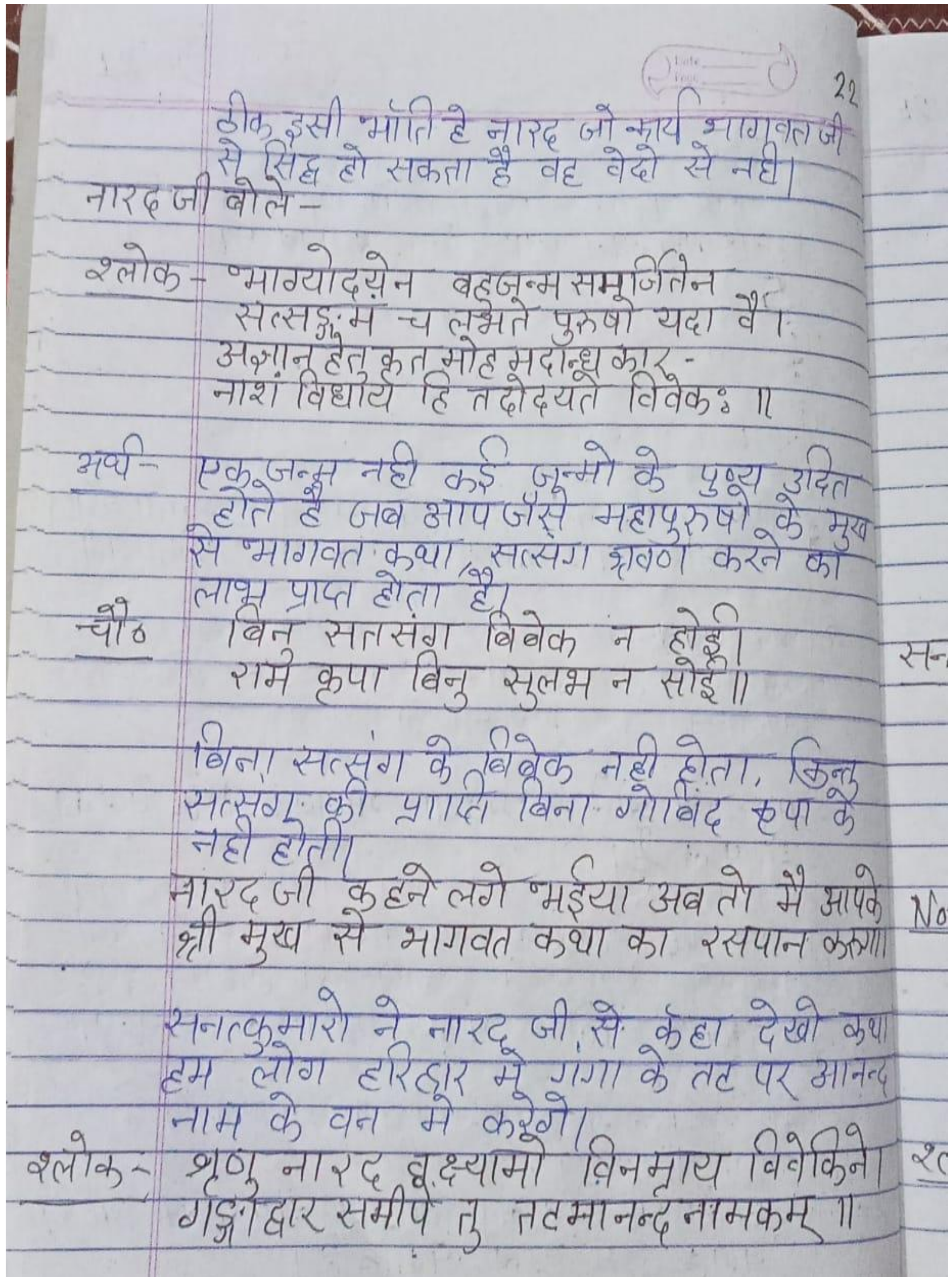
5 प्रकार के सत्कर्म है।
1. द्रव्य यज्ञ -
2. तप यज्ञ -
3. योग यज्ञ -
4. स्वाध्याय यज्ञ -
5. ज्ञान यज्ञ -

श्लोक - सत्कर्मसूचको नूनं ज्ञानयज्ञः स्मृतो बुधैः।
श्रीमद्भागवतालापः स तु गीतः शुकादिभिः॥

नारद पाँचवा सत्कर्म है श्रीमद् भागवत महापुराण ज्ञान यज्ञ इसके द्वारा ही ज्ञान, वैराग्य, भक्ति महारानी के कष्टों को दूर किया जा सकता है।

नारद जी बोले - "भईया भागवत जी तो वेद का ही फल है।
जब मैंने उन्हें वेद, वेदान्त का पाठ श्रवण कराया उससे कुछ नहीं हुआ तो "भागवत जी तो वेदरूपी वृक्ष का ही फल है, इससे क्या होगा।
सनत्कुमार बोले - माना वृक्ष पर फल आता किंतु

जो रस फल से प्राप्त होता क्या वो वृक्ष से हो सकता नहीं ना।
10 → दूध से घी निकला, तो क्या दीपक मे घी की जगह दूध डाल सकते है।

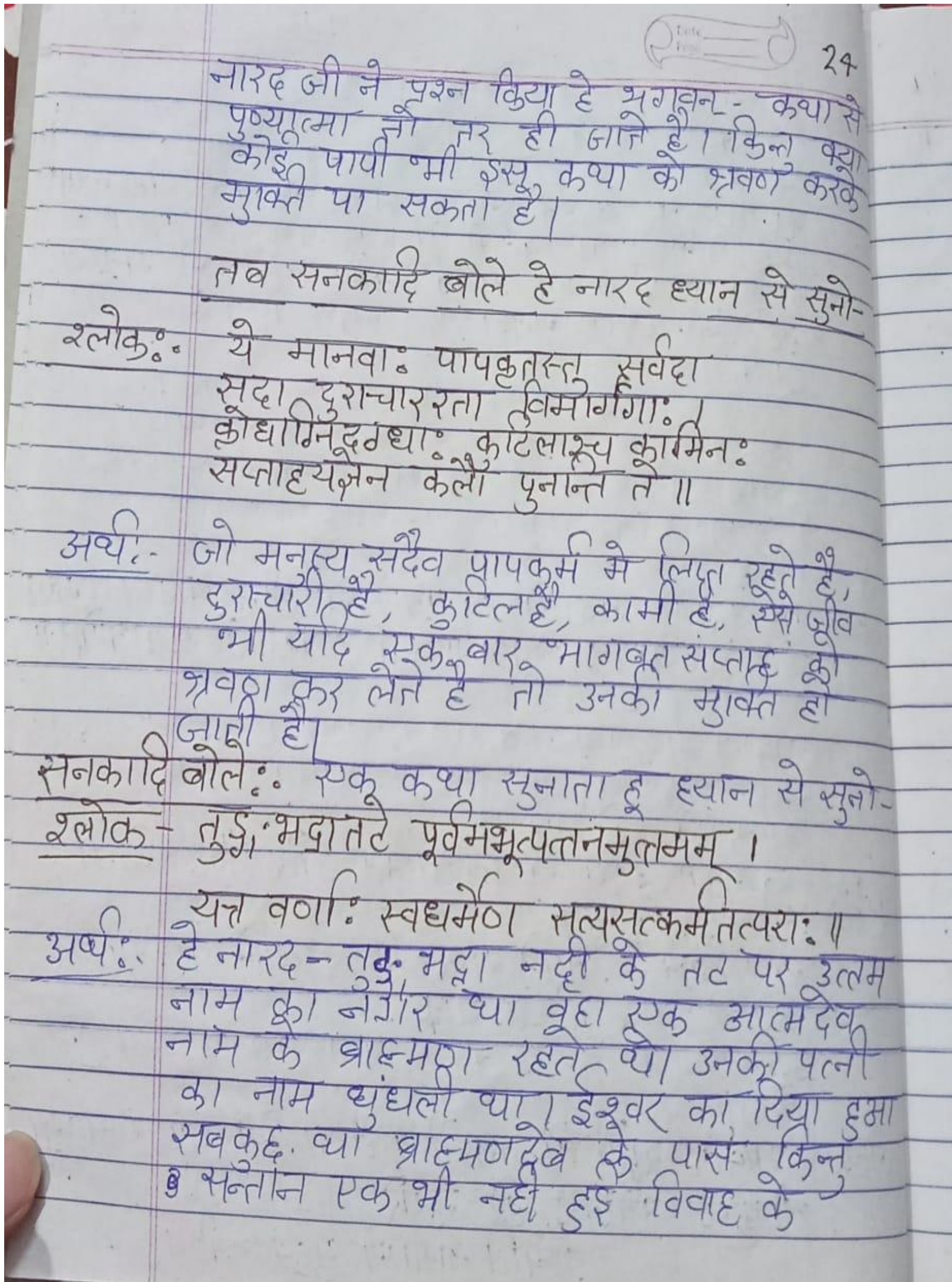

22
ठीक इसी भाँति हे नारद जो कार्य भागवत जी से सिद्ध हो सकता है वह वेदो से नही।
नारद जी बोले –
श्लोक – भाग्योदयेन बहुजन्म समर्जितेन
सत्सङ्गमं च लभते पुरुषो यदा वै।
अज्ञान हेतु कृत मोह मदान्धकार -
नाशं विधाय हि तदोदयते विवेकः ॥
अर्थ – एक जन्म नही कई जन्मो के पुण्य उदित होते है जब आप जैसे महापुरुषो के मुख से भागवत कथा, सत्संग श्रवण करने का लाभ प्राप्त होता है।
चौ० बिनु सतसंग बिबेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥
बिना सत्संग के बिवेक नही होता, किन्तु सत्संग की प्राप्ति बिना गोविंद कृपा के नही होती।
नारद जी कहने लगे भईया अब तो मै आपके श्री मुख से भागवत कथा का रसपान करूंगा।
सनत्कुमारो ने नारद जी से कहा देखो कथा हम लोग हरिद्वार मे गंगा के तट पर आनन्द नाम के वन मे करेंगे।
श्लोक – श्रृणु नारद वक्ष्यामो विनम्राय विवेकिने।
गङ्गाद्वार समीपे तु तटमानन्द नामकम् ॥

23

विचार करिए बन्धुओ नारद जी की भेट सनकादि से बद्रीनाथ मे हुई किन्तु भागवत कथा करने के लिए हरिद्वार को चुना ऐसा क्यो?
सनत्कुमार कहते हरिद्वार मध्य है, यदि यहा कथा होगी तो ऊपर पर्वतो से सन्तमहात्मा कथा श्रवण के लिए आ जायेगे और नीचे जो मनुष्य रहते वो कथा श्रवण के लिए थोड़ा ऊपर आ जायेगे।
देखते ही देखते वहा, भृगु वसिष्ठ, च्यवन, गौतम हजारो - हजारो महात्मा एकत्रित हो गए, ज्ञान और वैराग्य भी, अपनी माता भक्ति देवी के साथ पधारे कथा प्रारम्भ हुई।

सनत्कुमार कहते - सदा सेव्या, सदासेव्या श्रीमद्भागवती कथा
यस्याः श्रवणमात्रेण हरिश्चित्तं समाश्रयेत्॥

सदा श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण पान करो इसके श्रवण मात्र से नारायण हरि आपके हृदय मे आकर कैद हो जाएगे।
Note. बन्धुओ हृदय मे विराजित और कैद दोनो मे अन्तर है।
राजा बलि ने अपने महल के दरवाजे पर गोविंद को कैद कर लिया था।
कथा श्रवण करते - करते ज्ञान, वैराग्य दोनो युवा हो गए -
श्लोक - भक्तिः सुतौ तौ तरुणौ गृहीत्वा, प्रेमैकरूपा सहसाविरासीत्
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे,
नाथेति नामानि मुहुर्वदन्ती॥


24

नारद जी ने प्रश्न किया हे भगवन्- कथा से पुण्यात्मा तो तर ही जाते है। किन्तु क्या कोई पापी भी इस कथा को श्रवण करके मुक्ति पा सकता है।

तब सनकादि बोले हे नारद ध्यान से सुनो-

श्लोकः- ये मानवाः पापकृतस्तु सर्वदा
सदा दुराचाररता विमार्गगाः।
क्रोधाग्निदग्धाः कुटिलाश्च कामिनः
सप्ताहयज्ञेन कलौ पुनन्ति ते॥

अर्थः- जो मनुष्य सदैव पापकर्म मे लिप्त रहते है, दुराचारी है, कुटिल है, कामी है, ऐसे जीव भी यदि एक बार भागवत सप्ताह को श्रवण कर लेते है तो उनकी मुक्ति हो जाती है।

सनकादि बोलेः- एक कथा सुनाता हू ध्यान से सुनो-

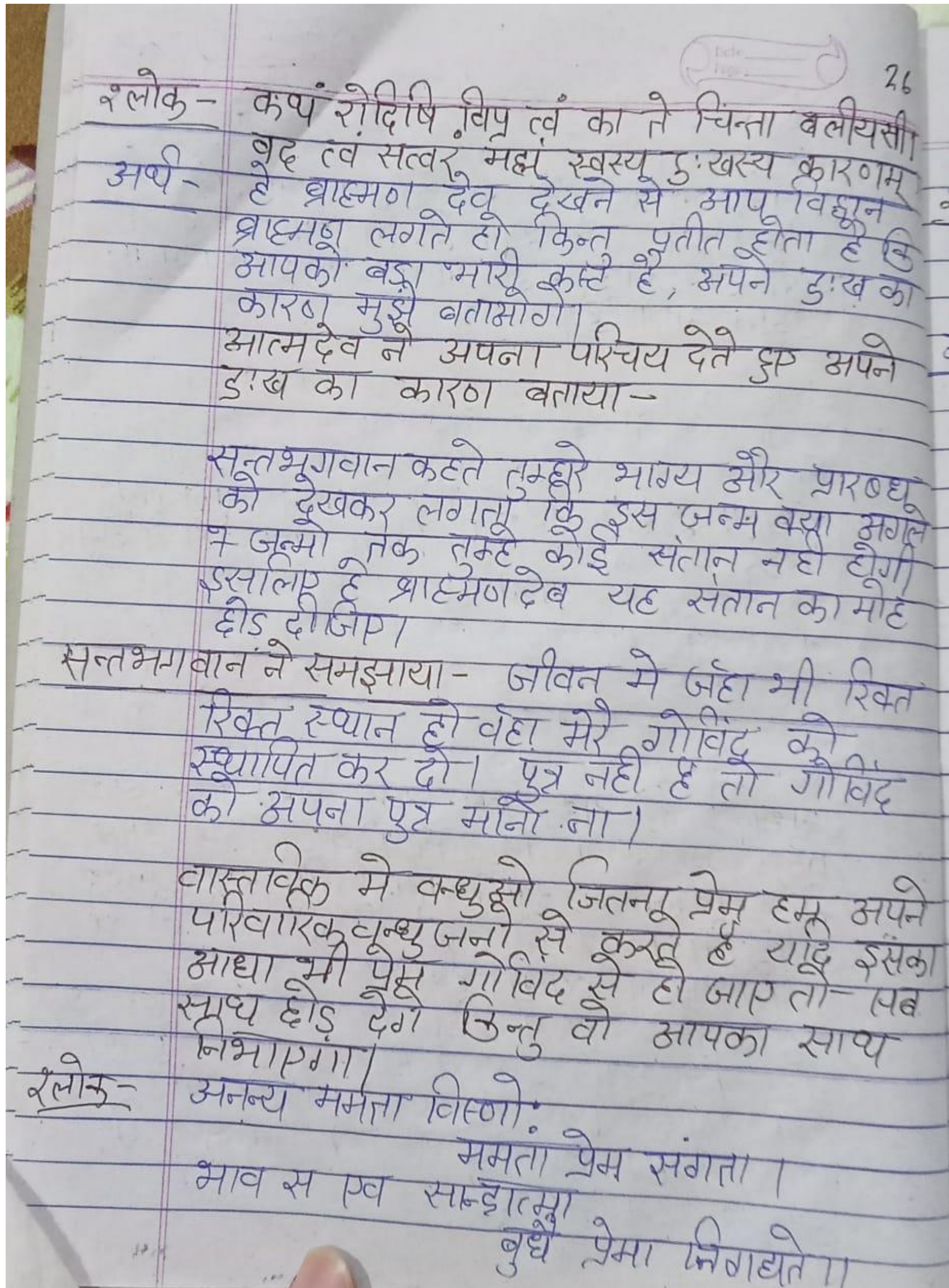
श्लोक- तुङ्गभद्रातटे पूर्वमभूत्पत्तनमुत्तमम्।
यत्र वर्णाः स्वधर्मेण सत्यसत्कर्मतत्पराः॥

अर्थः- हे नारद- तुङ्गभद्रा नदी के तट पर उत्तम नाम का नगर था वहा एक आत्मदेव नाम के ब्राह्मण रहते थे उनकी पत्नी का नाम धुंधली था। ईश्वर का दिया हुआ सबकुछ था ब्राह्मणदेव के पास किन्तु सन्तान एक भी नही हुई विवाह के

25

पश्चात, ना ही इनके घर गाय ने बछड़े को जन्म दिया।
आपको तो पता है बन्धुओ मांताओ जब हमारे जीवन मे दुख होता है तो हमारे दुख मे दुखी होने कोई नही आता सब हमारा मजाक उड़ाने आते है।

धुंधली के घर भी आस-पड़ोस की मईया आजाती अरे धुंधली बहन मेरे घर कल सत्यनारायण की कथा होगी क्या थोड़ा गाय का दूध मिलेगा धुंधली कहती बहन मेरे गाय ने आज तक बछड़े को जन्म नही दिया दूध कहा से होगा। तब तक दूसरी वाली अन्दर आती और कहती बहन मेरे घर बटुक ब्राह्मण जिमाए जायेंगे - अरे मै तो भूल ही गई तुम्हारे कोई संतान ही नही है, अरे बहन गलती हो गई माफ कर दो ऐसा बोल कर चली जाती।
धुंधली को यह सब सुनकर बहुत कस्त होता एक दिन शाम को आत्मदेव जी घर आए तो धुंधली ने सारी बताई और रोकर कहने लगी मुझे पुत्र दो कही से दो नही तो मै अपने प्राण त्याग दूंगी।
यह सुनकर आत्मदेव जी को बहुत कस्त हुआ और वह वन चले गए वहा जाकर रो रहे थे तभी वहा से एक महात्मा निकले और देखा एक ब्राह्मण देव रो रहे है। महात्मा ने ब्राह्मण देव से पूछा।


26

श्लोक- कथं रोदिषि विप्र त्वं का ते चिन्ता बलीयसी
वद त्वं सत्वरं मह्यं स्वस्य दुःखस्य कारणम्
अर्थ- हे ब्राह्मण देव देखने से आप विद्वान ब्राह्मण लगते हो किन्तु प्रतीत होता है कि आपको बड़ा भारी कष्ट है, अपने दुःख का कारण मुझे बताओगे।
आत्मदेव ने अपना परिचय देते हुए अपने दुःख का कारण बताया-

सन्तभगवान कहते तुम्हारे भाग्य और प्रारब्ध को देखकर लगता कि इस जन्म क्या अगले 7 जन्मो तक तुम्हे कोई संतान नही होगी इसलिए हे ब्राह्मणदेव यह संतान का मोह छोड़ दीजिए।
सन्तभगवान ने समझाया- जीवन मे जहा भी रिक्त रिक्त स्थान हो वहा मेरे गोविंद को स्थापित कर दो। पुत्र नही है तो गोविंद को अपना पुत्र मानो ना।

वास्तविक मे बन्धुओ जितना प्रेम हम अपने परिवारक बन्धुजनो से करते है यदि इसका आधा भी प्रेम गोविंद से हो जाए तो सब साथ छोड़ देंगे किन्तु वो आपका साथ निभाएगा।
श्लोक- अनन्य ममता विष्णो:
ममता प्रेम संगता।
भाव स एव सान्द्रात्मा
बुधै प्रेमा निगद्यते।।

27

सन्तभगवान ने बहुत समझाया आत्मदेव को-

श्लोक- मुञ्चाज्ञानं प्रजारूपं बलिष्ठा कर्मणो गतिः।

विवेकं तु समासाद्य त्यज संसारवासनाम्॥

अर्थ- सन्तभगवान कहते है ब्राह्मण - संतान के लिए रो रहे हो, मान लीजिए संतान होकर के वही आपके दुःख का कारण बन जाए इससे अच्छा तो आप निःसंतान ही अच्छे है पुत्र नहीं है तो आज ही रो रहे हो किंतु पुत्र यदि कुपुत्र बन गया तो जीवन भर रोना पड़ेगा बहुत समझाया किंतु आत्मदेव को कुछ समझ नही आया।

आत्मदेव जी कहने लगे यदि मुझे संतान की प्राप्ति नही हुई तो मै आपके चरणो मे सिर पटक-पटक कर अपने प्राण त्याग दूंगा।

महात्मा जी कहने लगे हे भगवान ये मै कहा फस गया। मेरे चरणो मे प्राण त्याग कर मुझे ब्राह्मण हत्या का पाप लगाएगा।

संतभगवान ने झोली मे से एक फल निकाला और पण्डित जी को दे दिया और कहा यह फल अपनी पत्नी को खिला देना संतान होगी।

आत्मदेव जी ने घर आकर वह फल अपनी पत्नी को खाने के लिए दे दिया।

धुंधली ने फल ले तो लिया किंतु विचार करने लगी यदि मैं यह फल खाऊगी तो गर्भधारण करना पड़ेगा, पीड़ा सहनी पड़ेगी और हमने तो सुना है कि सुकदेव जी तो माँ के गर्भ में बारह वर्ष रहे यदि हमारे साथ भी ऐसा हो गया तो मेरा क्या होगा अरे राम-2 नही मै फल नही खाऊगी।

इतने मे धुंधली की बहन आ गई धुंधली ने सारी बात अपनी बहन को बताई बहन कहने लगी देखो धुंधली बहन -

तुम्हारे घर खाने को बहुत है, पर खाने वाला कोई नही, पर मेरे घर खाने वाले बहुत है पर खाने को कुछ नही।

इसलिए एक कार्य करो, अबकी बार मेरे जो संतान होगी उसको मै तुम्हे लाकर दे दूगा उसके बदले मे तुम मुझे धन दे देना बात तय हो गई।

धुंधली गर्भधारण करने का नाटक करती रही और समय आने पर उसकी बहन ने रात के अंधेरे मे आकर चुपचाप वह बालक धुंधली को दिया। सुबह तो हल्ला हो गया धुंधली को लाला हुआ।

बाबा असली बोले है या नकली बोले यह जानने के लिए जो फल महात्मा ने दिया था वह गाय को खिला दिया।

आत्मदेव ने अपने पुत्र का नामकरण किया-

श्लोक- पुत्रस्य धुन्धकारीति नाम, मात्रा प्रतिष्ठितम् ॥

अर्थ- धुंधली ने कहा मेरा नाम धुंधली है, तो अपने पुत्र का नाम मैं धुंधकारी रखूगी।

सनत्कुमार जी कहते हे नारद जी -

पुत्र जन्म के तीन महीने बाद ही -

श्लोक- त्रिमासे निर्गते चाप्प सा धेनुः सुषुवेऽर्भकम्।

गाय माता ने भी सुन्दर से बछड़े को जन्म दिया, आत्मदेव ने गाय के बछड़े का नाम [redacted] गोकर्ण रखा

सनत्कुमार कहते - आगे चलकर गोकर्ण जी तो महान ज्ञानी बने किन्तु धुंधकारी गलत संगत मे पड़ गया।

श्लोक:- गोकर्णः पण्डितो ज्ञानी धुन्धकारी महाखलः ॥

बन्धुओ माताओ बालक को बचपन मे ही अच्छे संस्कार देने चाहिए। बच्चा बचपन मे (कुछ) के लगाकर मैच खेलता माँ कहती बच्चा ही है अभी किंतु एक दिन वह बड़ा होकर (IPL) मे पैसा लगाने लगता और सबकुछ बर्बाद कर देता तब माता, पिता को बड़ा कस्ट होता है इसलिए हम बचपन मे जैसे ससकार बच्चो को देगे

30

बड़े होकर बच्चे वही करेंगे।

उदा०→ एक मईया ने - अपने बच्चे को पढ़ाने के लिए बाहर भेजा। माँ विचार कर रही थी मेरा बेटा डॉक्टर बनेगा। किन्तु एक दिन एक व्यक्ति ने आकर बताया कि आपका बेटा तो मुझे नियम से (मदिरालय) शराब के दुकान पर खड़ा मिलता है। साथ मे दो चार लड़के भी खड़े रहते है सिगरेट पकड़े यह सुनकर माता को बहुत कष्ट हुआ और वह विचार करने लगी कि कल मेरे बहन के बेटे की शादी है और इसने वहा जाकर भी यदि ऐसा ही किया तो हमारी कितनी बदनामी होगी। इसलिए उसने अपने बेटे को समझाकर कहा देखो बेटा कल वहा चलकर चुपचाप रहना कुछ भी ऐसा न करना जिससे हमारी बदनामी हो, बेटे ने कहा ठीक है माँ। अगले दिन माँ, बेटे शादी मे पहुँचे और चुपचाप वहा बैठ गए।

माँ ने समझाया था इसलिए बेटा कुछ देर तो चुपचाप बैठा रहा किन्तु वो कहते है ना जो अन्दर भरा होता है ना वो कुछ देर बाद दिख ही जाता है।

मईया विचार कर रही थी -

सुना है आज महफिल मे बड़ी रफ्तागिरी होगी।
निकलेगा वही दिल से, जो दिल मे पहले से भरी होगी।

9340598708

31

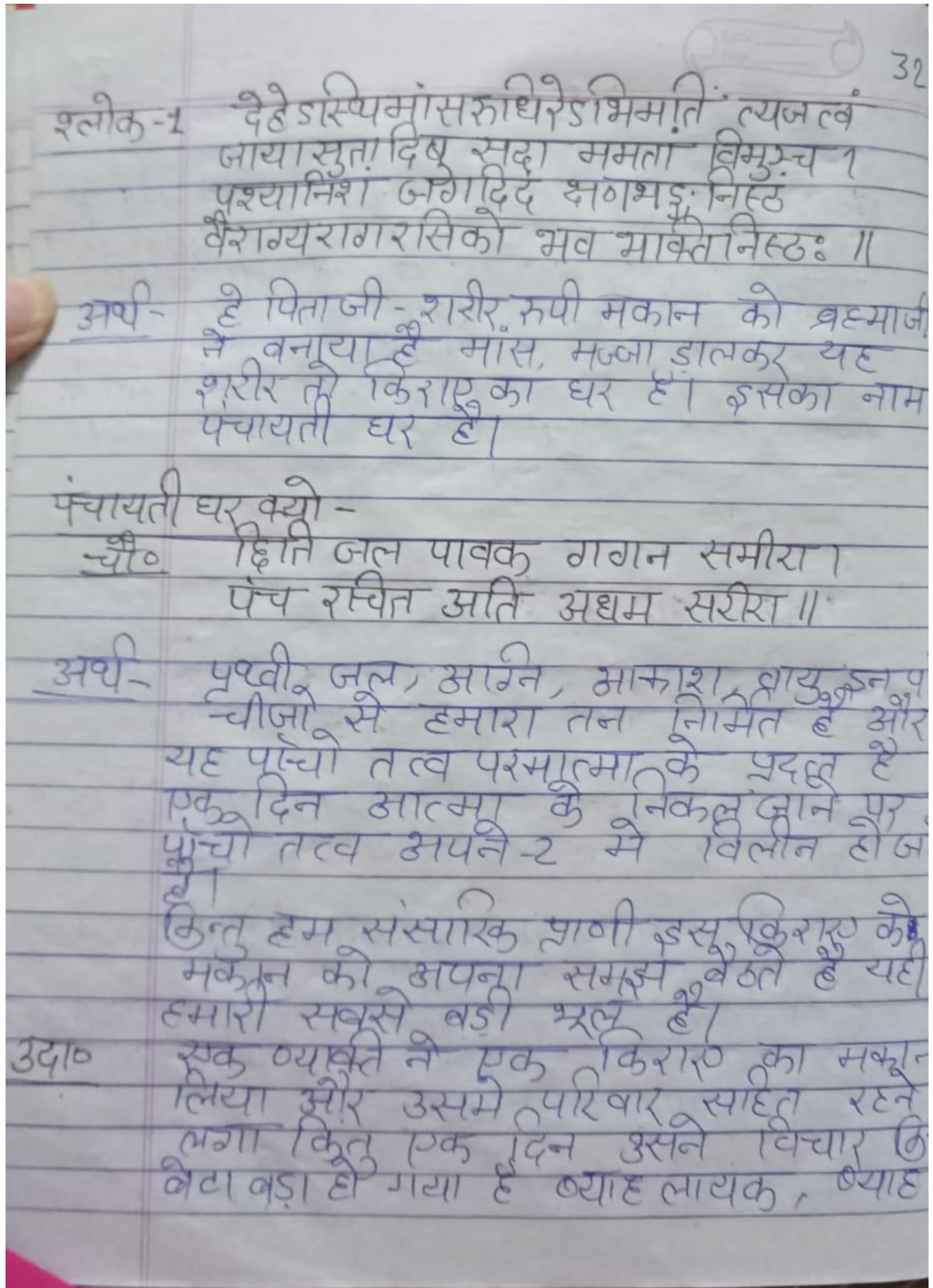
जो अन्दर भरा होता है त वन्धुओ वो दिखही जाता है।
बन्धुओ बचपन शरीर रूपी मकान की नीव है यदि नीव ही कमजोर होगी तो मकान कैसे मजबूत होगा इसलिए बचपन मे अपनी संतान को अच्छे संस्कार दो।
वन्धुओ, माताओ धुन्धकारी बड़ा होकर चोरी करने लगा, वैश्या गमन करने लगा जो भी घर मे धन रखा था वह भी सब ले गया माता धुंधली को पीटने लगा।

Note- तुङ्गभद्रा क्या है - हमारा शरीर
कुतर्कनी बुद्धि क्या है - धुंधली

सत्संग नही करोगे तो अज्ञानरूपी धुंधकारी आपका कल्याण नही होने देगा।

एक दिन तो धुंधली इतनी परेशान हो गई कि कुए मे कूद कर आत्महत्या कर ली।

रात्रि के समय आत्मदेव जी बैठे-2 रुदन कर रहे है।
तभी गोकर्ण महाराज जी ने आकर के दो श्लोको मे आत्मदेव जी को सुन्दर ज्ञान दिया जिसे गोकर्ण गीता कहते है।



32

श्लोक-1 देहेऽस्थिमांसरुधिरेऽभिमतिं त्यजत्वं
जायासुतादिषु सदा ममतां विमुञ्च।
पश्यानिशं जगदिदं क्षणभङ्गनिस्ठं
वैराग्यरागरसिको भव भक्तिनिस्ठः॥

अर्थ- हे पिताजी - शरीर रुपी मकान को ब्रह्माजी ने बनाया है मांस, मज्जा डालकर यह शरीर तो किराए का घर है। इसका नाम पंचायती घर है।

पंचायती घर क्यो -

चौ० छिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित अति अधम सरीरा॥

अर्थ- पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु इन पांच चीजो से हमारा तन निर्मित है और यह पांचो तत्व परमात्मा के प्रदत्त है एक दिन आत्मा के निकल जाने पर पांचो तत्व अपने-2 मे विलीन हो जाते है।

किन्तु हम संसारिक प्राणी इस किराए के मकान को अपना समझ बैठते है यही हमारी सबसे बड़ी भूल है।

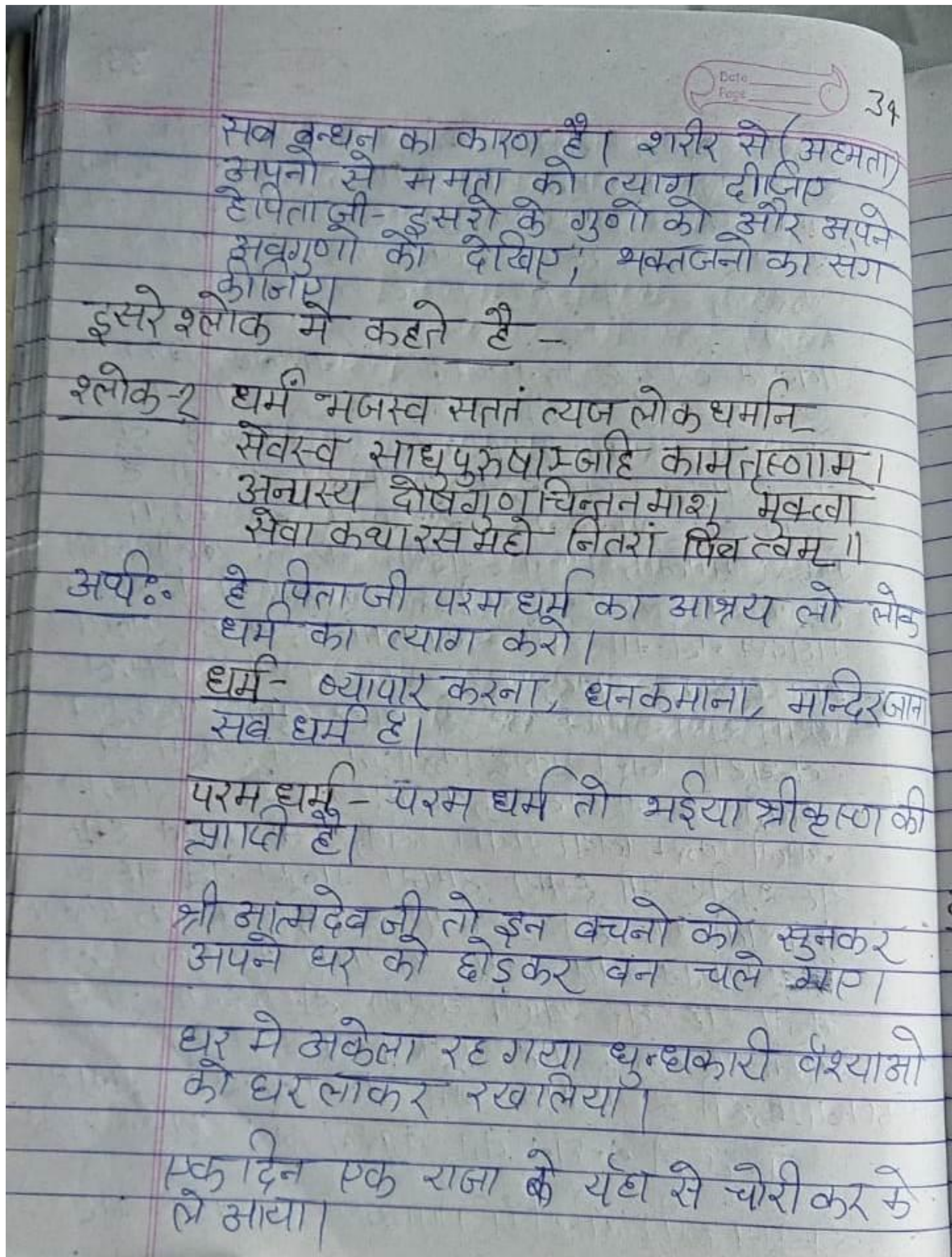
उदा० एक व्यक्ति ने एक किराए का मकान लिया और उसमे परिवार सहित रहने लगा किंतु एक दिन उसने विचार कि बेटा बड़ा हो गया है ब्याह लायक, ब्याह

किस घर मे करूगा। तो मकान मालिक ने कहा इसी घर से शादी कर लेना। तुम पुताई करालो अपने पैसे से। किराए मे तुम्हारे पैसे कटते रहेगा। उसने ऐसा ही किया अपने पैसो से पुताई करा के उसी घर से बेटे का विवाह कर लिया।

विवाह के कुछ दिन बाद ही मालिक बोला भइया घर खाली करना है। जिस ब्यक्ति ने 5000 रुपए लगाकर पुताई कराई हो वह ब्यक्ति घर कैसे खाली कर सकता है उसने घर खाली करने से मना कर दिया मकान मालिक बोला "भइया घर तो खाली करना ही होगा। राजी से नही तो कुराजी से किराएदार महोदय नही माने तो मकानमालिक ने दो पुलिस वाले बुलाकर धक्केमारकर घर से बाहर निकाल दिया। सारा सामान घर से बाहर लाकर पटक दिया

Note - बन्धुओ जिस प्रकार किराएदार ने राजी से मकान खाली नही किया तो कुराजी से मकान खाली करा लिया गया। ठीक इसी भांति हमारा यह शरीर भी हमारा अपना मकान नही यह तो पंचायती घर है। इसलिए इसकी अधिक डेन्टिंग [redacted] पेन्टिंग मत करिए अन्यथा मै एक दिन तो यह घर खाली करना ही पड़ेगा। चाहे राजी से करो चाहे कुराजी से

गोकर्णजी कहते - हे पिता जी अहमता और ममता ये दो ही बन्धन का कारण है। अपने शरीर से प्रेम (मै) और (मेरा) परिवार, मेरे बच्चे यह



34

सब बन्धन का कारण है। शरीर से (अहमता) अपनो से ममता को त्याग दीजिए हे पिताजी- दूसरो के गुणो को और अपने अवगुणो को देखिए, भक्तजनो का संग कीजिए

दूसरे श्लोक मे कहते है -

श्लोक-२ धर्मं भजस्व सततं त्यज लोकधर्मान्
सेवस्व साधुपुरुषाम्जहि कामतृष्णाम्।
अन्यस्य दोषगुणचिन्तनमाशु मुक्त्वा
सेवा कथारसमहो नितरां पिब त्वम्॥

अर्थः हे पिता जी परम धर्म का आश्रय लो लोक धर्म का त्याग करो।

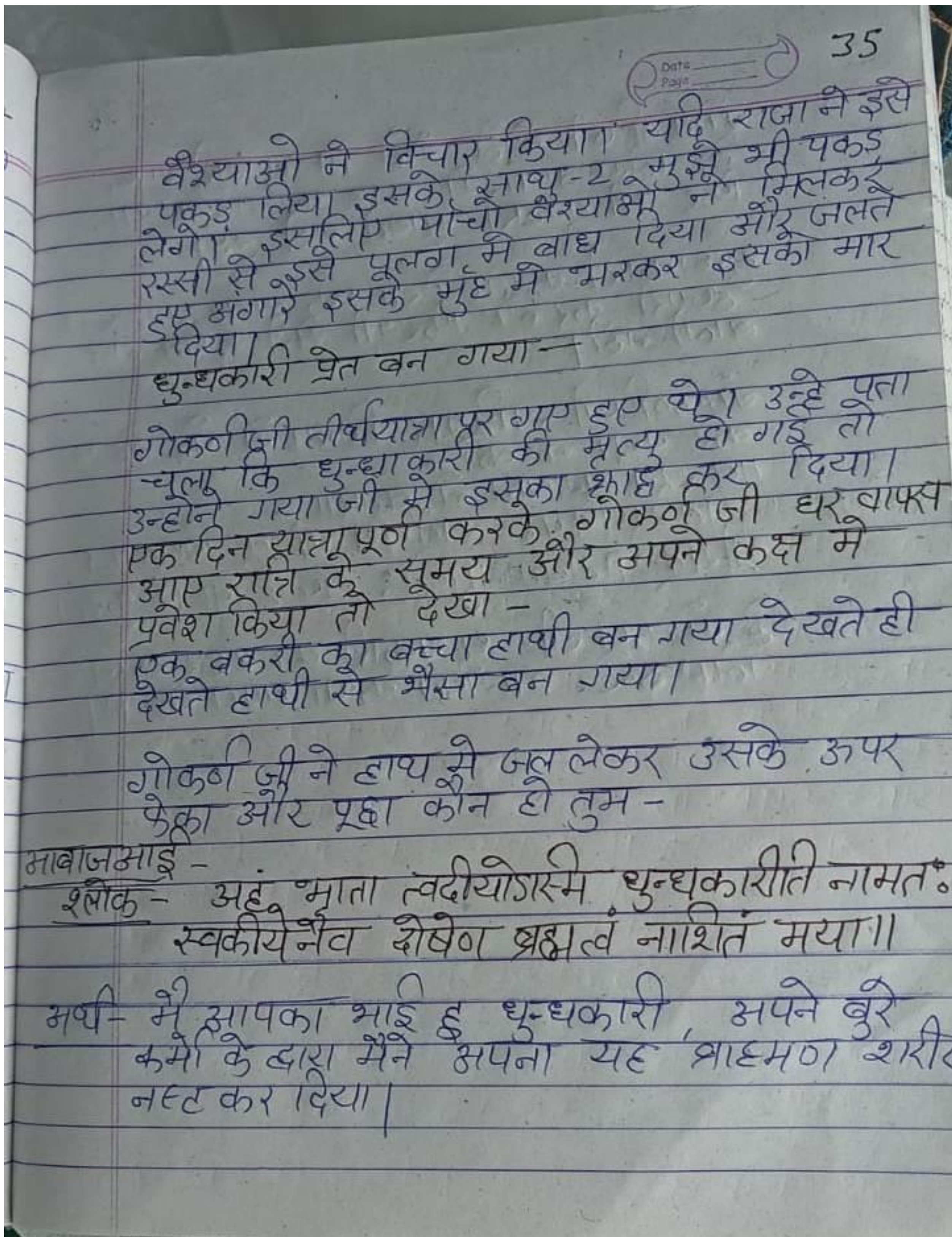
धर्म- व्यापार करना, धनकमाना, मन्दिरजाना सब धर्म है।

परम धर्म - परम धर्म तो भईया श्रीकृष्ण की प्राप्ति है।

श्री आत्मदेव जी तो इन वचनो को सुनकर अपने घर को छोड़कर वन चले गए।

घर मे अकेला रह गया धुन्धकारी वेश्याओ को घर लाकर रखलिया।

एकदिन एक राजा के यहा से चोरी करके ले आया।



35

वैश्याओ ने विचार किया। यदि राजा ने इसे पकड़ लिया इसके साथ-2 मुझे भी पकड़ लेगा। इसलिए पाँचो वैश्याओ ने मिलकर रस्सी से इसे पलंग मे बांध दिया और जलते हुए अंगारे इसके मुंह मे भरकर इसको मार दिया।

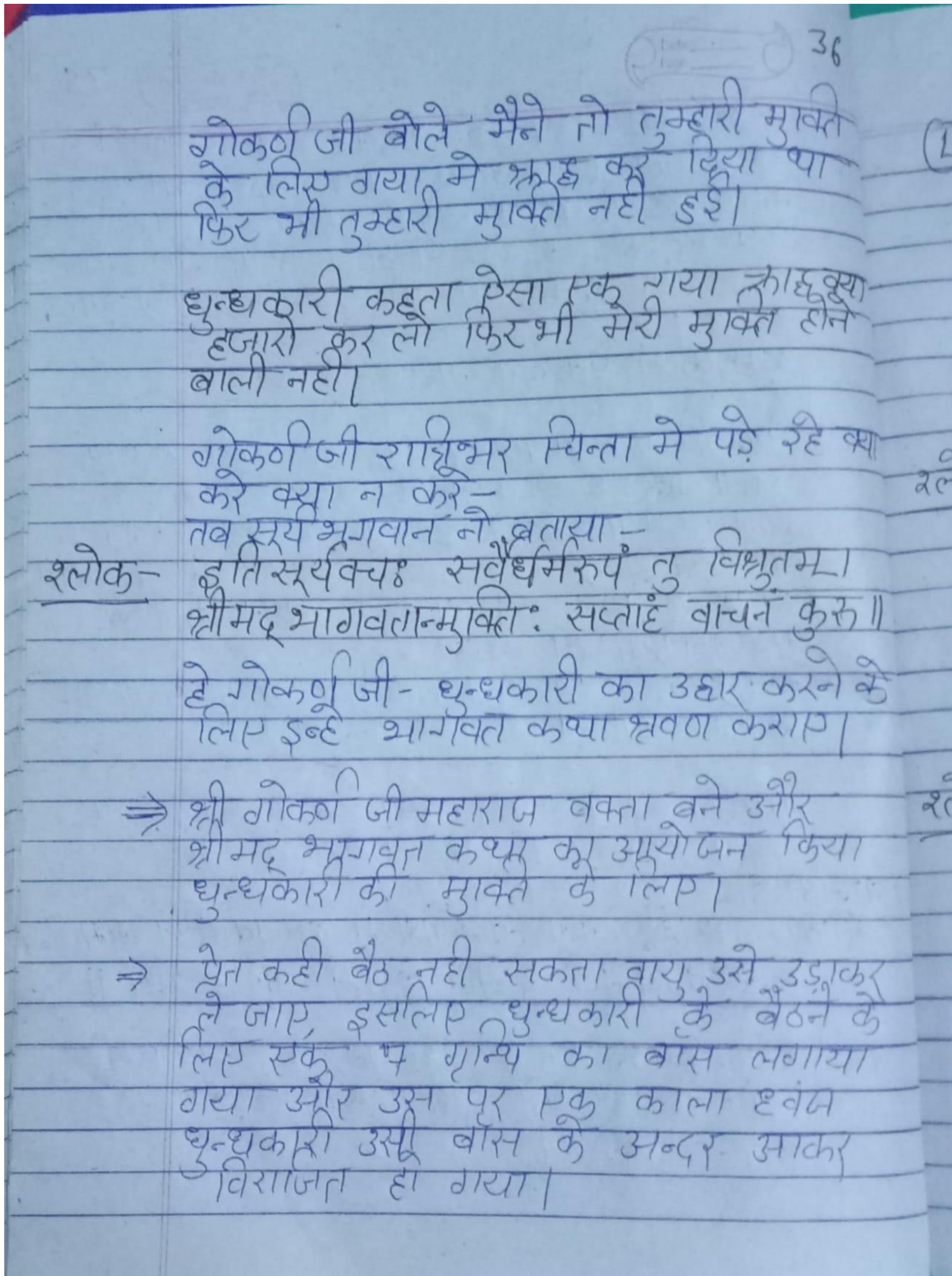
धुन्धकारी प्रेत बन गया –

गोकर्ण जी तीर्थयात्रा पर गए हुए थे। उन्हे पता चला कि धुन्धाकारी की मृत्यु हो गई तो उन्होने गया जी मे इसका श्राद्ध कर दिया। एक दिन यात्रा पूर्ण करके गोकर्ण जी घर वापस आए रात्रि के समय और अपने कक्ष मे प्रवेश किया तो देखा –
एक बकरी का बच्चा हाथी बन गया देखते ही देखते हाथी से भैंसा बन गया।

गोकर्ण जी ने हाथ से जल लेकर उसके ऊपर फेंका और पूछा कौन हो तुम –

आवाज आई –
श्लोक – अहं भ्राता त्वदीयोऽस्मि धुन्धकारीति नामतः
स्वकीयेनैव दोषेण ब्रह्मत्वं नाशितं मया॥

अर्थ – मैं आपका भाई हू धुन्धकारी, अपने बुरे कर्मो के द्वारा मैंने अपना यह ब्राह्मण शरीर नष्ट कर दिया।



36

गोकर्ण जी बोले मैने तो तुम्हारी मुक्ति के लिए गया मे श्राद्ध कर दिया था फिर भी तुम्हारी मुक्ति नही हुई।

धुन्धकारी कहता ऐसा एक गया श्राद्ध क्या हजारो कर लो फिर भी मेरी मुक्ति होने वाली नही।

गोकर्ण जी रात्रि भर चिन्ता मे पड़े रहे क्या करे क्या न करे -
तब सूर्य भगवान ने बताया -

श्लोक- इति सूर्यवचः सर्वैर्धर्मरूपं तु विश्रुतम्।
श्रीमद् भागवतान्मुक्तिः सप्ताहं वाचनं कुरु॥

हे गोकर्ण जी- धुन्धकारी का उद्धार करने के लिए इन्हे भागवत कथा श्रवण कराए।

⇒ श्री गोकर्ण जी महाराज वक्ता बने और श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया धुन्धकारी की मुक्ति के लिए।

⇒ प्रेत कही बैठ नही सकता वायु उसे उड़ाकर ले जाए, इसलिए धुन्धकारी के बैठने के लिए एक 7 ग्रन्थि का बांस लगाया गया और उस पर एक काला ध्वज धुन्धकारी उसी बांस के अन्दर आकर विराजित हो गया।

37

(1) प्रथम दिवस की कथा के उपरान्त उस बॉस की प्रथम ग्रान्थि फट गई, द्वितीय दिवस मे दूसरी, इसी प्रकार से एक-2 करके 7 दिनो मे बॉस की सातो ग्रान्थि चटक गई और कथा विराम के समय देवदूत विमान लेकर प्रकट हो गए और धुन्धकारी दिव्य स्वरूप मे प्रकट होकर श्री भागवत जी की महिमा गाने लगा।

श्लोक- धन्या भागवती वार्ता प्रेतपीड़ा विनाशिनी।
सप्ताहोऽपि तथा धन्यः कृष्णलोक फलप्रदः॥

धन्य है श्री भागवत जी जिनके श्रवणमात्र से ही धुन्धकारी जैसा प्रेत मुक्त होकर दिव्य स्वरूप पाकर विमान मे बैठकर भगवान के धाम को जाने लगा।

श्लोक- सर्वेषां पश्यतां भेजे विमानं धुन्धलीसुतः।
विमाने वैष्णवान् वीक्ष्य गोकर्णो वाक्यमब्रवीत॥

विमान मे बैठकर धुन्धकारी भगवत् धाम जाने लगा। बन्धुओ, माताओ अब हमार मन मे एक प्रश्न उठता है कि कथा गोकर्ण जी ने अकेले धुन्धकारी को तो नही सुनाई वहा तो हजारो लोगो ने कथा का श्रवण पान किया फिर विमान सिर्फ धुन्धकारी के लिए ही क्यो आया।

38

यही विचार गोकर्ण जी के मन मे भी आया कि कथा तो हजारो लोगो ने श्रवण की किन्तु विमान सिर्फ धुन्धकारी के लिए ही क्यो आया।
प्रभु के पार्षद बोले-

श्लोक- ① अत्रैव बहवः सन्ति श्रोतारो मम निर्मलाः
आनीतानि विमानानि, न तेषां युगपत्कृतः॥
② श्रवणस्य विभेदेन, फलभेदोऽत्र संस्थितः।
श्रवणं तु कृतं सर्वैर्न, मननं कृतम्॥

अर्थ- ① प्रभु पार्षद कहते कथा पाण्डाल मे उपस्थित होकर कथा तो हजारो भक्त श्रवण करते है किन्तु प्रत्येक व्यक्ति कथा को निर्मल मन से श्रवण पान कर रहा हो ये आवश्यक नही है।

② कथा श्रवण मे भी भेद है, कुछ लोग सिर्फ कथा को श्रवण ही करते है, किन्तु कुछ लोग कथा को श्रवण के साथ-2 मनन भी करते है।

③ जो लोग कथा को श्रवण करके मनन नही करते उनका श्रीमद् भागवत जी कल्याण नही कर सकती।

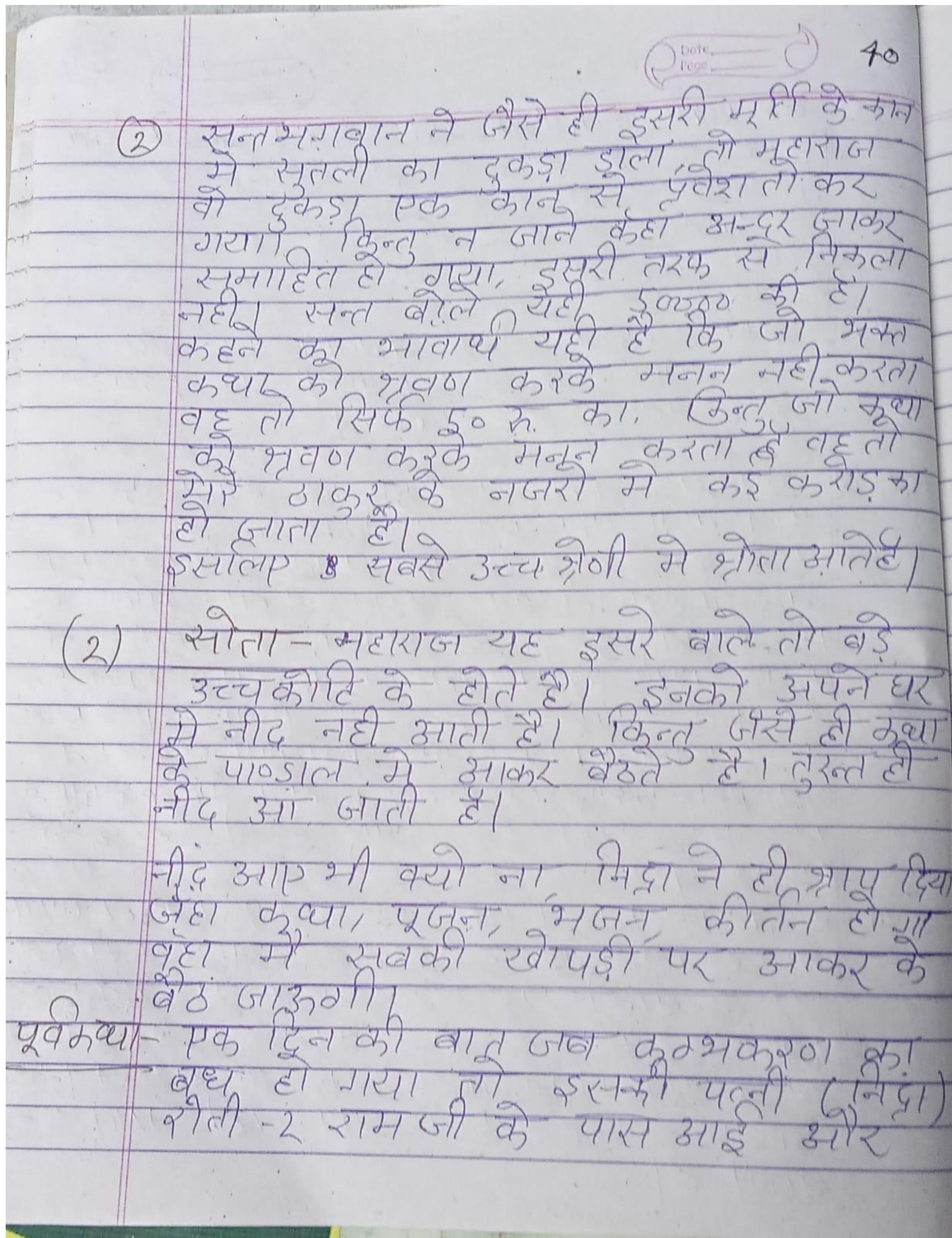
39

बन्धुओ, माँताओ श्रोता तीन प्रकार के होते है।
(1) श्रोता
(2) स्रोता
(3) सरोता

(1) श्रोता - वन्धुओ जो भगवान की कथा को श्रवण करके, उस कथा को हृदय मे उतार लेता है, वह श्रोता है।

उदाहरण - एकबार नदी मे एक सन्त स्नान कर रहे थे। तभी वहा एक मूर्तिकार दो एक समान, रंग, रूप, आकृति की मूर्तिया लेकर आया और कहने लगा। मूर्ति ले लो, मूर्ति ले लो एक मूर्ति 50 रु. की, एक मूर्ति 50000 रु की। सभी अचम्भित हो गए, एक मूर्ति 50 की एक मूर्ति 50000 की ऐसा क्या अन्तर है, इन दोनो मूर्तियो मे, तभी वहा सन्त भगवान पधारे और कहने लगे मै बताता हू कि एक मूर्ति 50, और दूसरी 50000 की क्यो है।

(1) सन्त भगवान ने वहा खडे युवक से कहा जाओ दो सुतली के टुकडे लेकर आओ, सन्त ने 50 रु. वाली मूर्ति के कान मे टुकडा डाला, जैसे ही एक कान से सुतली का टुकडा प्रवेश किया, दूसरे कान से निकल गया। सन्त बोले बस यही मूर्ति 50 रु वाली है।


40

(2) सन्त भगवान ने जैसे ही दूसरी मूर्ति के कान मे सुतली का टुकड़ा डाला तो महाराज वो टुकड़ा एक कान से प्रवेश तो कर गया। किन्तु न जाने कहाँ अन्दर जाकर समाहित हो गया, दूसरी तरफ से निकला नही। सन्त बोले यही 5000 की है। कहने का भावार्थ यही है कि जो भक्त कथा को श्रवण करके मनन नही करता वह तो सिर्फ 50 रु. का। किन्तु जो कथा को श्रवण करके मनन करता है वह तो मेरे ठाकुर के नजरो मे कई करोड़ का हो जाता है।
इसलिए सबसे उच्च श्रेणी मे श्रोता आते है।

(2) सोता - महाराज यह दूसरे वाले तो बड़े उच्च कोटि के होते है। इनको अपने घर मे नीद नही आती है। किन्तु जैसे ही कथा के पाण्डाल मे आकर बैठते है। तुरन्त ही नीद आ जाती है।

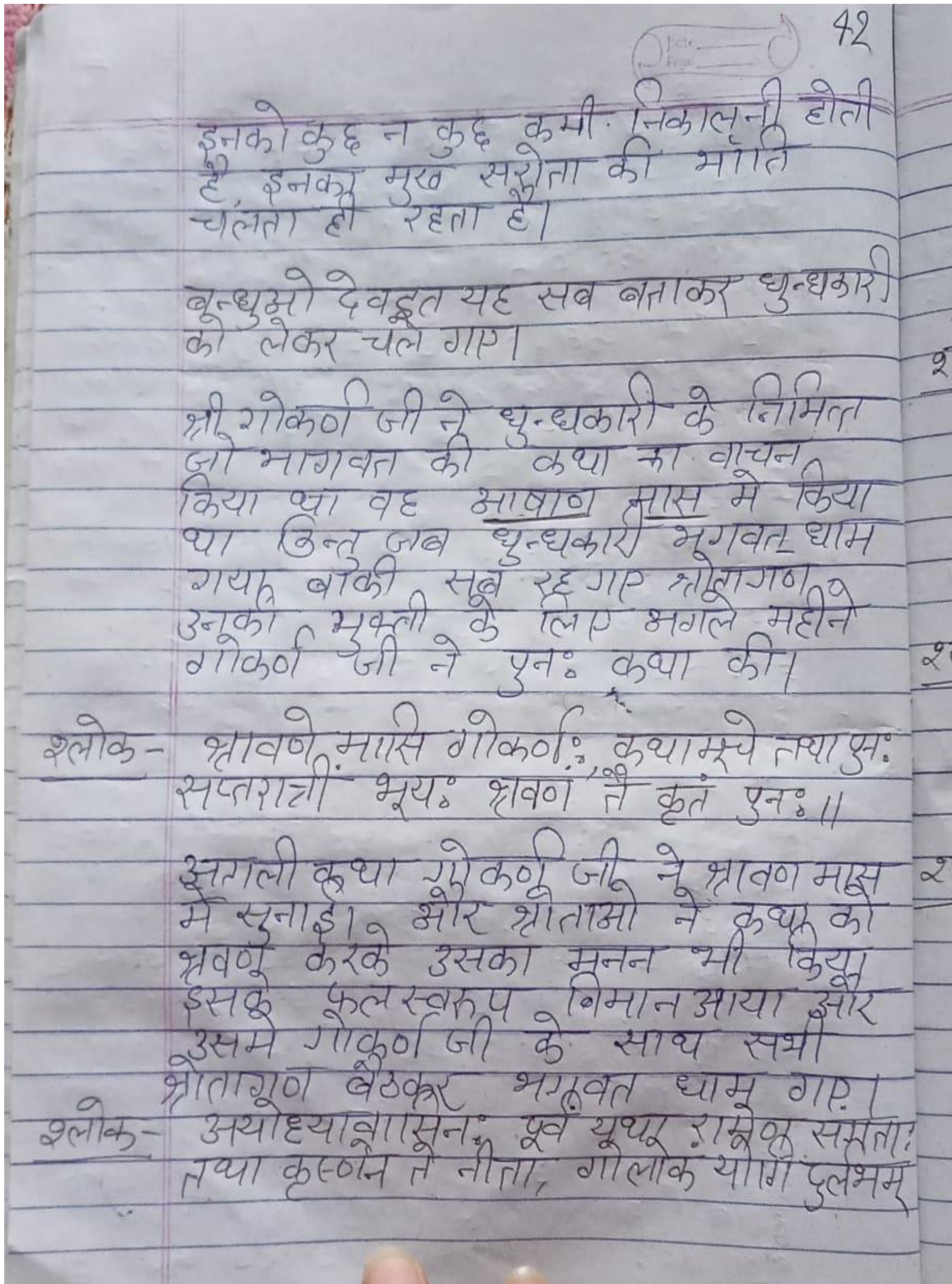
नीद आए भी क्यो ना निद्रा ने ही श्राप दिया जहा कथा, पूजन, भजन कीर्तन होगा वहा मै सबकी खोपड़ी पर आकर के बैठ जाऊगी।

पूर्वकथा - एक दिन की बात जब कुम्भकरण का बध हो गया तो इसकी पत्नी (निद्रा) रोती -2 राम जी के पास आई और

आकर बोली - राम जी मैं आपको छोड़ूगी
नहीं अपनी पति के मृत्यु का बदला लूगी
मुझे आप यह बतादो राम जी आप
रहते कहा हो। राम जी बोले जहा मेरा, कीर्तन
भजन, कथा होगी वहा ही मैं मिलता हूं।
निद्रा ने कहा ठीक है, आज के बाद जहाँ
भी, कथा, भजन, कीर्तन होगा वहा जाकर
सबकी खोपड़ी पर मैं बैठ जाऊगी, तब
से आज तक निद्रा देवी भजन, कीर्तन, कथा
मे आ रही है।

यह द्वितीय कोटि के श्रोता जो इतने महान होते
है कि जहा खम्भ देखा नही कथा पाण्डाल मे
महाराज टेक लगाकर बोले जय श्री कृष्ण
अच्छा हमारी माताओ को तो एक विशेष
छूट मिली है पर्दे (घूघट) की। ये जब टेक
लगाकर सो जाती पाण्डाल मे तो ब्यास
जी भी नही देख पाते मईया कथा सुन रही या
सो रही। हमारे पुरुष भाईयो के पास घूघट
नही है। जैसे ही ये सोते ब्यास जी देख
लेते और सम्बोधन करके जगा देते।

(3) सरोता - यह जो तृतीय कोटि मे आते है
यह तो कथा पाण्डाल मे आते ही इसलिए
है कि कोई न कोई कमी निकाल सके
जैसे सरोता दिन-रात्रि सुपारी काटता रहता
इसी भांति यह श्रोता (सरोता) भी कथा पाण्डाल
मे आकर अरे ब्यास जी तो बहुत अच्छे
है, बस भजन थोड़ा कम गाते है। व्यवस्था
बहुत अच्छी है, बस मंच थोड़ा टेढ़ा बना है।


42
इनको कुछ न कुछ कमी निकालनी होती है, इनका मुख सरोता की भाँति चलता ही रहता है।
बन्धुओ देवदूत यह सब बताकर धुन्धकारी को लेकर चले गए।
श्री गोकर्ण जी ने धुन्धकारी के निमित्त जो भागवत की कथा का वाचन किया था वह आषाढ़ मास मे किया था किन्तु जब धुन्धकारी भगवत धाम गया, बाकी सब रह गए श्रोतागण, उनकी मुक्ती के लिए अगले महीने गोकर्ण जी ने पुनः कथा की।
श्लोक- श्रावणे मासि गोकर्णः कथामूचे तथा पुनः सप्तरात्री भूयः श्रवणं तै कृतं पुनः॥
अगली कथा गोकर्ण जी ने श्रावण मास मे सुनाई, और श्रोताओ ने कथा को श्रवण करके उसका मनन भी किया इसके फलस्वरूप बिमान आया और उसमे गोकर्ण जी के साथ सभी श्रोतागण बैठकर भगवत धाम गए।
श्लोक- अयोध्यावासिनः पूर्वं यथा रामेण संगताः तथा कृष्णेन ते नीता, गोलोकं योगि दुर्लभम्

जिस प्रकार अयोध्यावासी श्री राम जी के साथ साकेत गए थे उसी प्रकार गोकर्ण जी के साथ सभी श्रोता गोलोक चले गए।

-: नारद जी ने सप्ताह श्रवण की बिधी पूछी :-

श्लोक- अथ ते सम्प्रवक्ष्यामः सप्ताह श्रवणे बिधिम्।

नारद जी कहते हे सनत्कुमारो भागवत सप्ताह श्रवण की बिधी क्या है। कृपया करके विस्तार से बताइए। सनत्कुमारो ने सप्ताह श्रवण की बिधि को विस्तार से समझाया।

श्लोक- दैवज्ञं तु समाहूय मुहूर्तं पृच्छ्य यत्नतः

किसी योग्य ब्राह्मण से भागवत कथा के आयोजन के लिए मुहूर्त निकलवाए।

श्लोक- देशे-देशे तथा सेयं वार्ता प्रेष्या प्रयत्नतः।
भविष्यति कथा चात्र आगन्तव्यं कुटुम्बिभिः॥

जब आपके यहाँ भागवत कथा का आयोजन हो तब आप दूर संचार (कार्ड) के माध्यम से दूर-2 तक जहाँ भी आपके रिश्तेदार रहते हो सभी को सूचना भेजे और उनको आमन्त्रित करे, कि -- तारीख को हमारे यहाँ भागवत जी का आयोजन होगा, आप सभी सपरिवार पधारे

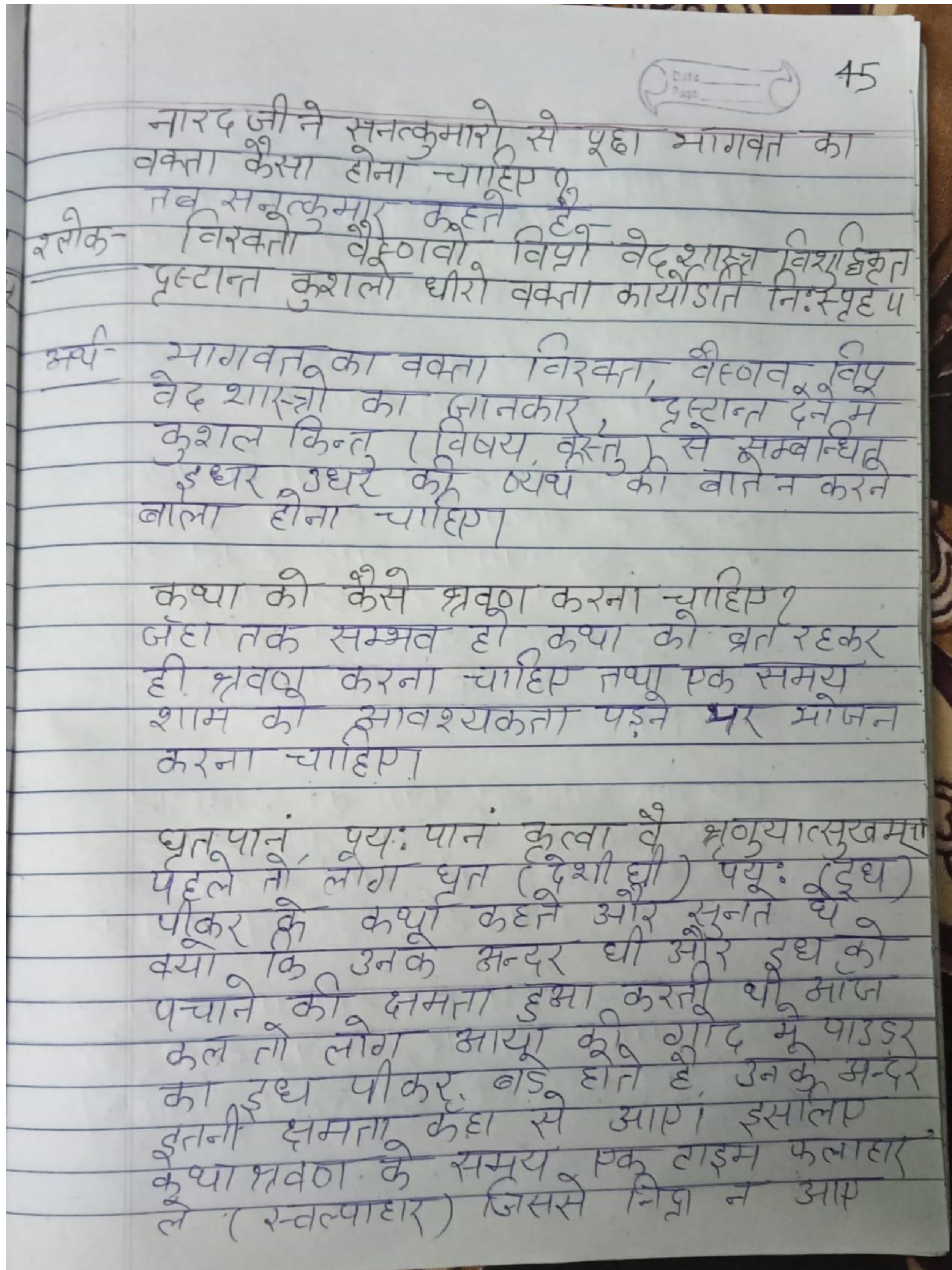
इसके उपरान्त कथा स्थल का (चयन) करना चाहिए।

श्लोक- तीर्थे वापि, वनेवापि, गृहे वा श्रवणं मतम्। विशाला, वसुधा, यत्र, कर्तव्यं तत्कथास्थलम्

सनत्कुमार कहते नारद जी कथा के आयोजन के लिए सर्वप्रथम हमको तीर्थ स्थान का चयन करना चाहिए तीर्थस्थान सम्भव न हो तो वन मे कथा का आयोजन करना चाहिए - वन भी सम्भव न हो तो हमे अपने घर मे ही भागवत कथा का आयोजन करना चाहिए।

श्लोक- शोधनं, मार्जनं भूमेर्लेपनं धातुमण्डनम्।

जिस भूमि पर भागवत कथा का आयोजन करना है उस भूमि का पहले शोधन, मार्जन कर भूमि को पवित्र करके उसे गोबर से लीपना चाहिए।


45

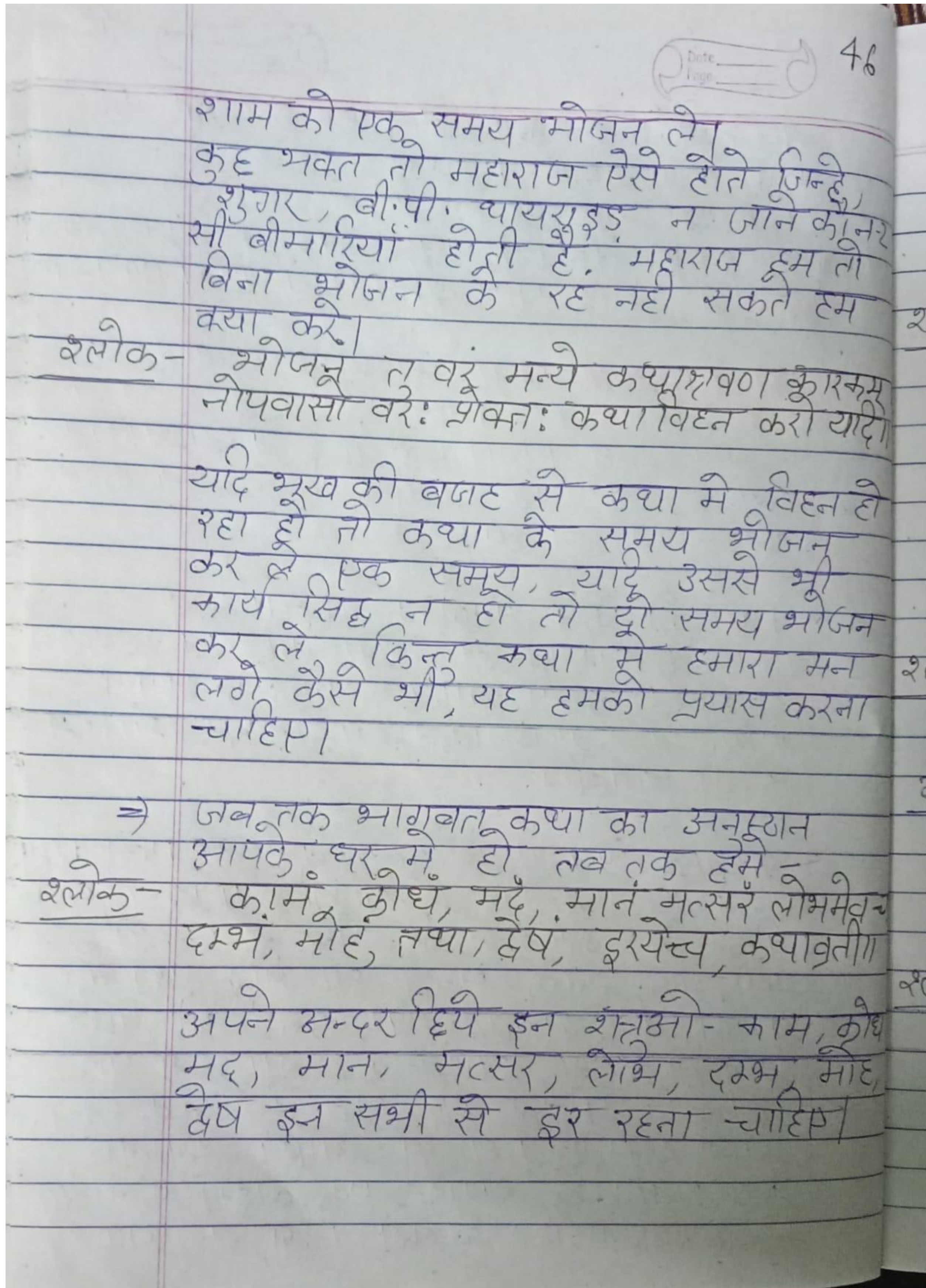
नारद जी ने सनत्कुमारो से पूछा भागवत का वक्ता कैसा होना चाहिए ?
तब सनत्कुमार कहते हैं-

श्लोक- विरक्तो वैष्णवो विप्रो वेदशास्त्र विशुद्धिकृत
दृष्टान्त कुशलो धीरो वक्ता कार्योऽति निःस्पृहः ॥

अर्थ- भागवत का वक्ता विरक्त, वैष्णव, विप्र वेद शास्त्रो का जानकार, दृष्टान्त देने में कुशल किन्तु (विषय, वस्तु) से सम्बन्धित इधर उधर की व्यर्थ की बातें न करने वाला होना चाहिए।

कथा को कैसे श्रवण करना चाहिए ?
जहा तक सम्भव हो कथा को व्रत रहकर ही श्रवण करना चाहिए तथा एक समय शाम को आवश्यकता पड़ने पर भोजन करना चाहिए।

घृतपानं पयः पानं कृत्वा वै श्रणुयात्सुखम्
पहले तो लोग घृत (देशी घी) पयः (दूध) पीकर के कथा कहते और सुनते थे क्यो कि उनके अन्दर घी और दूध को पचाने की क्षमता हुआ करती थी आज कल तो लोग आया की गोद में पाउडर का दूध पीकर बड़े होते हैं, उनके अन्दर इतनी क्षमता कहा से आए। इसलिए कथा श्रवण के समय एक टाइम फलाहार ले (स्वल्पाहार) जिससे निद्रा न आए



46

शाम को एक समय भोजन ले।
कुछ भक्त तो महाराज ऐसे होते जिन्हे,
शुगर, बी.पी. थायराइड न जाने कौन२
सी बीमारियां होती है. महाराज हम तो
बिना भोजन के रह नही सकते हम
क्या करे।

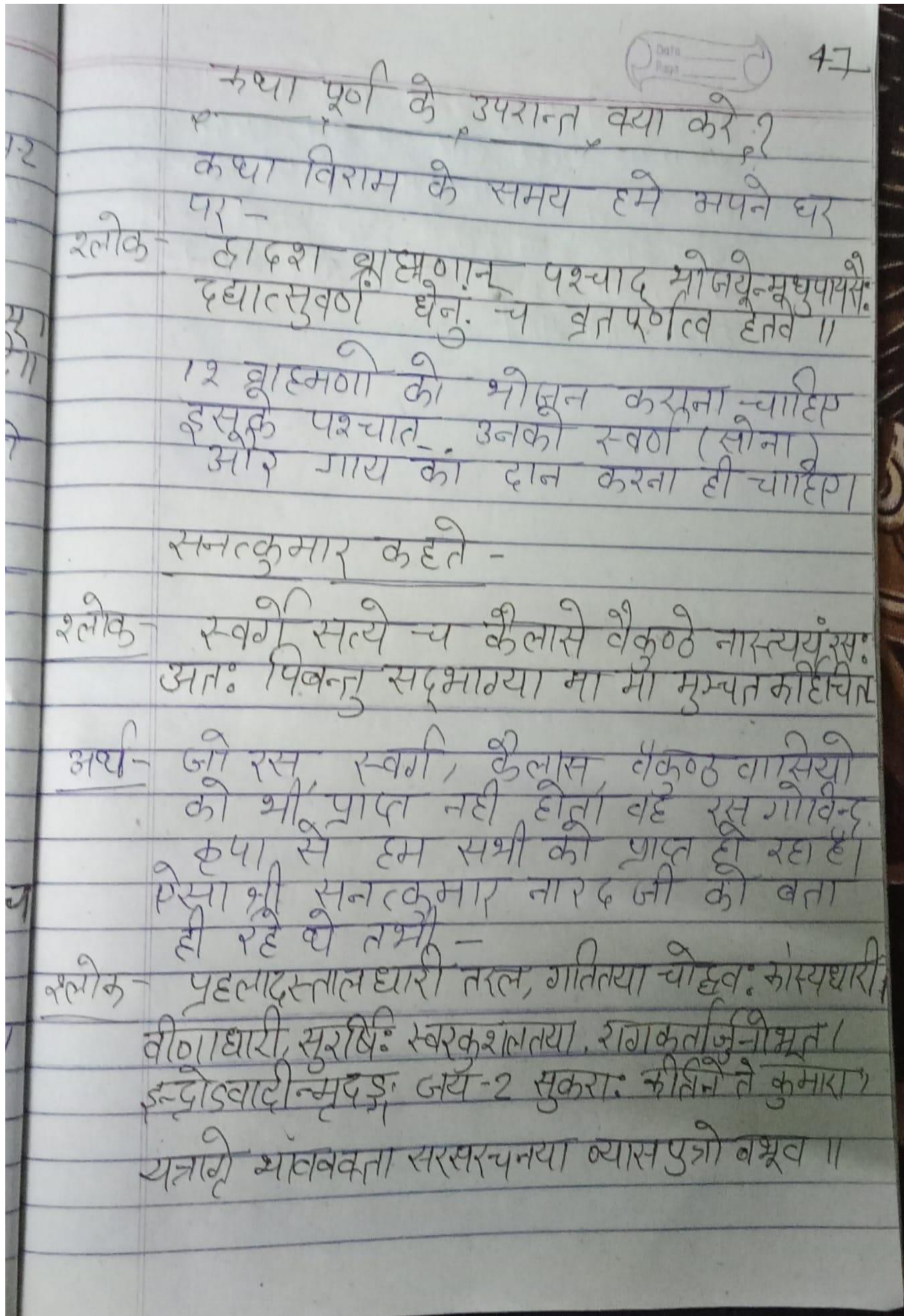
श्लोक- भोजनं तु वरं मन्ये कथाश्रवण कारकम्
नोपवासो वरः प्रोक्तः कथाविघ्न करो यदि।

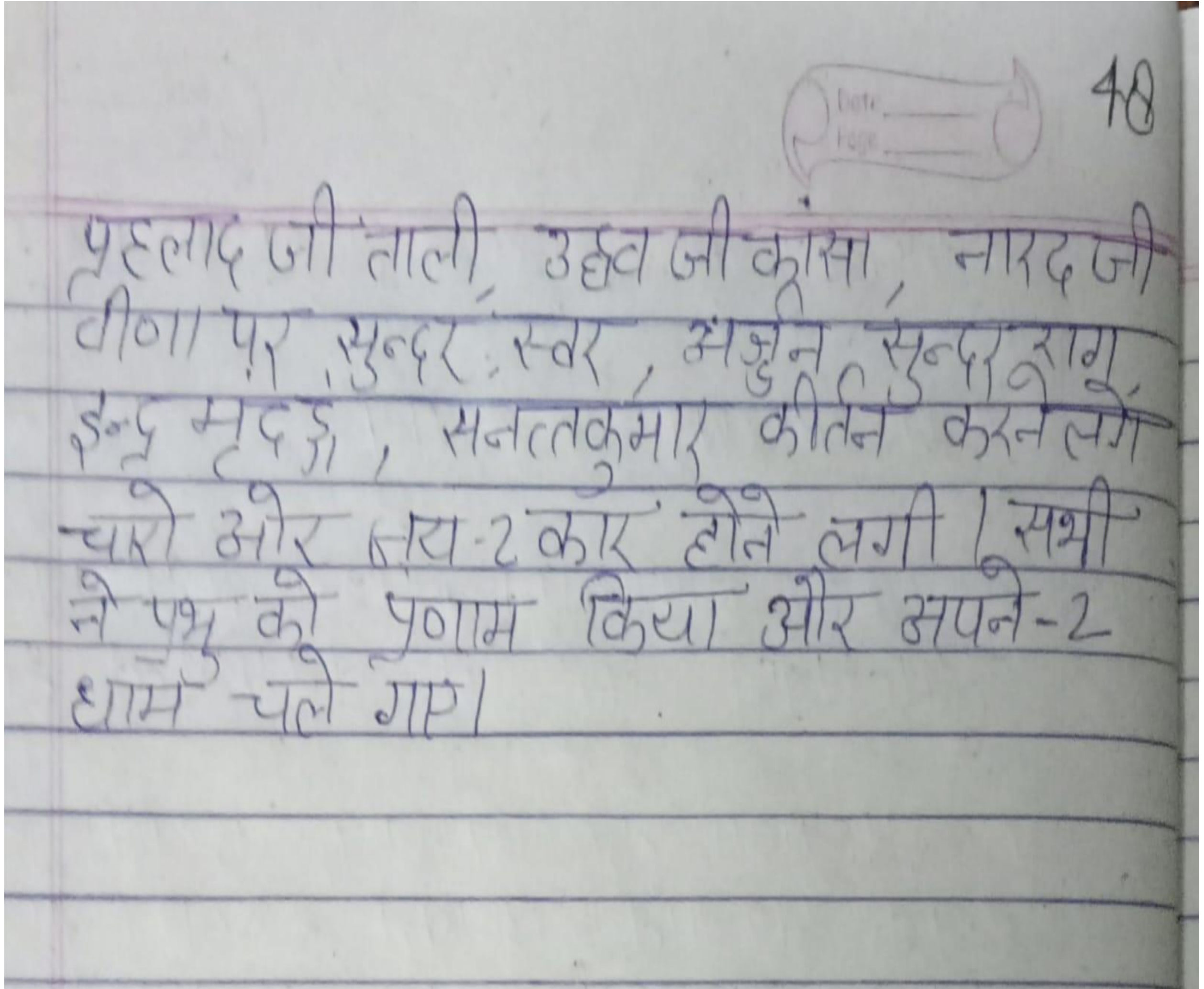
यदि भूख की वजह से कथा मे विघ्न हो
रहा हो तो कथा के समय भोजन
कर ले एक समय, यदि उससे भी
कार्य सिद्ध न हो तो दो समय भोजन
कर ले किन्तु कथा मे हमारा मन
लगे कैसे भी, यह हमको प्रयास करना
चाहिए।

=> जब तक भागवत कथा का अनुष्ठान
आपके घर मे हो तब तक हमे -

श्लोक- कामं, क्रोधं, मदं, मानं मत्सरं लोभमेव च
दम्भं, मोहं, तृष्णा, द्वेषं, इरयेत्च, कथाव्रती।।

अपने अन्दर छिपे इन शत्रुओ- काम, क्रोध
मद, मान, मत्सर, लोभ, दम्भ, मोह,
द्वेष इन सभी से दूर रहना चाहिए।


47
कथा पूर्ण के उपरान्त क्या करे ?
कथा विराम के समय हमे अपने घर पर -
श्लोक- द्वादश ब्राह्मणान् पश्चाद भोजयेन्मधुपायसैः
दद्यात्सुवर्णं धेनुं च व्रतपूर्णत्व हेतवे ॥
१२ ब्राह्मणो को भोजन कराना चाहिए इसके पश्चात उनको स्वर्ण (सोना) और गाय का दान करना ही चाहिए।
सनत्कुमार कहते -
श्लोक- स्वर्गे सत्ये च कैलासे वैकुण्ठे नास्त्ययंरसः
अतः पिबन्तु सद्भाग्या मा मा मुञ्चत कर्हिचित्
अर्थ- जो रस स्वर्ग, कैलास, वैकुण्ठ वासियो को भी प्राप्त नही होता वह रस गोविन्द कृपा से हम सभी को प्राप्त हो रहा है। ऐसा श्री सनत्कुमार नारद जी को बता ही रहे थे तभी -
श्लोक- प्रह्लादस्तालधारी तरल, गतितया चोद्धवः कांस्यधारी
वीणाधारी, सुरर्षिः स्वरकुशलतया, रागकर्ताऽर्जुनोऽभूत्।
इन्द्रोऽवादीन्मृदङ्गं जय-2 सुकराः कीर्तने ते कुमारा
यत्राग्रे भावववक्ता सरसरचनया व्यासपुत्रो बभूव ॥



48

प्रह्लाद जी ताली, उद्धव जी कांसा, नारद जी
वीणा पर सुन्दर स्वर, अर्जुन सुन्दर राग,
इन्द्र मृदङ्ग, सनत्तकुमार कीर्तन करने लगे
चारो ओर जय-2 कार होने लगी। सभी
ने प्रभु को प्रणाम किया और अपने-2
धाम चले गए।